वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:6 अंक: 61 गुरुवार 6 अगस्त 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

आरयूआईडीपी के पांचवें चरण में जयपुर शहर में होगा 2233 करोड़ का निवेश

आरयूआईडीपी संवाद कार्यक्रमों का आयोजन 5 अगस्त से 11 अगस्त 2026 तक

भूमिगत जल के दोहन में कमी पांचवें चरण में ट्रीटेडवाटर के रियूज पर किया जाए फोकस: संदेश नायक

जनप्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्र में किए जाने वाले विकास कार्यों की बारे में फीडबैक दिया

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजस्थान नगरीय आधारभूत विकास परियोजना के पांचवें चरण में जयपुर में 2233 करोड़ का निवेश किया जाएगा। जिला कलेक्ट्रेट सभागार में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों और अन्य स्टेकहोल्डर्स से हुए संवाद कार्यक्रम में विकास कार्यों की विस्तृत जानकारी दी गई। आदर्शनगर से विधायक रफीक खान, आमेर से विधायक प्रशांत शर्मा और जिला कलेक्टर संदेश नायक संवाद कार्यक्रम में मौजूद रहे। जनप्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्र में किए जाने वाले विकास कार्यों की बारे में फीडबैक दिया और पांचवें चरण की परियोजना के बारे में अपने सुझाव भी साझा किये। इस दौरान आदर्श नगर के विधायक रफीक खान ने कहा कि जलमहल और कानोता बांध में जा रहे दूषित जल के शोधन के लिए समुचित क्षमता के सीवेज शोधन संयंत्र की आवश्यकता है। उन्होंने जयपुर शहर में पुरानी सीवर लाईन के अपग्रेडेशन को पांचवें चरण में शामिल करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि प्रोजेक्ट की सफलता के लिए जरूरी है कि आरयूआईडीपी, नगर निगम एवं अन्य सहयोगी विभागों के बीच सामंजस्य हों। आमेर विधायक प्रशान्त शर्मा ने कहा कि पांचवें चरण में सेटेलाइट टाउन्स में अचरोल व कूकस को भी शामिल किया जाये क्योंकि इन क्षेत्रों में शहरीकरण तेजी से हुआ है। कार्यशाला में जिला कलेक्टर संदेश नायक ने पांचवें चरण की पूरी जानकारी ली और कहा कि पांचवें चरण में ट्रीटेडवाटर के रियूज पर जोर दिया जाये जिससे की भूमिगत जल के दोहन में कमी आये। प्रोजेक्ट इस बात का ध्यान रखे कि क्रियान्वयन में तकलीफे कम से कम हो और प्रोजेक्ट का लाभ आम जन तक जल्द पहुंचे। इस वर्कशॉप के माध्यम से प्रतिभागियों के रचनात्मक सुझाव सामने आये।

आरयूआईडीपी व स्थानीय निकायों के मध्य सामंजस्य पर जोर दिया

कार्यक्रम में शहर के जनप्रतिनिधि, पूर्व पार्षद, प्रबुद्धजन, विभिन्न विभागों के अधिकारी, प्रेस, प्रोजेक्ट से जुड़े अधिकारियों व आमजन ने शिरकत की। इस अवसर पर विभिन्न वक्ताओं ने आरयूआईडीपी द्वारा शहरी विकास के क्षेत्र में किये जा रहे कार्यों के सफल निष्पादन में स्थानीय निकायों के निर्वाचित प्रतिनिधियों एवं अधिकारियों के सहयोग हेतु आरयूआईडीपी व स्थानीय निकायों के मध्य सामंजस्य पर जोर दिया। आरयूआईडीपी द्वारा पांचवें चरण में साढ़े नौ हजार करोड़ से होने वाले कार्यों पर 84 शहरों में जनप्रतिनिधियों, पूर्व पार्षदों, प्रबुद्धजनों, मीडिया एवं अन्य स्टेकहोल्डर्स के लिए कंसल्टेशन मीटिंग्स आरयूआईडीपी संवाद का आयोजन किया जा रहा है। आरयूआईडीपी संवाद कार्यक्रमों का आयोजन 5 अगस्त से 11 अगस्त 2026 तक किया जायेगा जिसमें पंचम चरण में होने वाले कार्यों की जानकारी दी जायेगी तथा साथ ही प्रतिभागियों से सुझाव व फीडबैक लिया जायेगा।

फेडरेशन स्थापना दिवस पर स्वास्थ्य परिचर्चा, विशेषज्ञों ने दिए स्वस्थ जीवन के महत्वपूर्ण मंत्र

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप फेडरेशन, राजस्थान रीजन जयपुर की ओर से फेडरेशन स्थापना दिवस के अवसर पर इंटरनल (ईएचसीसी) हॉस्पिटल, जयपुर के सहयोग से स्वास्थ्य परिचर्चा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में राजस्थान रीजन के विभिन्न दिगम्बर जैन सोशल ग्रुपों के अध्यक्ष, सचिव, पदाधिकारी एवं बड़ी संख्या में सदस्य शामिल हुए। कार्यक्रम का शुभारंभ भक्तामर स्तोत्र के 26वें श्लोक से मंगलाचरण के साथ हुआ। इसके बाद अतिथियों ने भगवान महावीर एवं फेडरेशन के राष्ट्रीय संस्थापक अध्यक्ष स्व. प्रदीप कुमार सिंह कासलीवाल के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया। स्वागत उद्बोधन में रीजन अध्यक्ष सुनील सुमन बज ने अतिथियों, चिकित्सकों एवं उपस्थित सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा कि समाज में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता बढ़ाना बड़ी सेवा है और इस प्रकार के कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित होते रहने चाहिए। मुख्य वक्ता डॉ. प्रेम रतन डेंगावत ने ''हार्ट अटैक से कैसे बचें'' विषय पर सरल एवं वैज्ञानिक जानकारी देते हुए हृदय रोगों की रोकथाम, समय पर जांच, संतुलित आहार और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने पर जोर दिया। वहीं डॉ. लवदीप डोगरा ने ''नेफ्रोलॉजी : किडनी से जुड़े मिथक एवं तथ्य'' विषय पर जानकारी देते हुए किडनी रोगों की रोकथाम, उचित उपचार और जागरूकता के महत्व पर प्रकाश डाला। सदस्यों ने चिकित्सकों से विभिन्न प्रश्न पूछकर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी प्राप्त किया। इस अवसर पर रीजन संस्थापक अध्यक्ष एवं राष्ट्रीय परामर्शदाता अनिल शशि जैन तथा राष्ट्रीय अतिरिक्त महासचिव एवं रीजन निवर्तमान अध्यक्ष राजेश-सीमा बड़जात्या का तिलक, माला, दुपट्टा एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मान किया गया। उन्होंने फेडरेशन के संबंध में जानकारी दी। इस दौरान स्व. प्रदीप कुमार सिंह कासलीवाल, स्व. महेन्द्र कुमार पाटनी, स्व. नवीन सेन जैन और स्व. सुरेन्द्र कुमार पाटनी के फेडरेशन के प्रति समर्पण एवं योगदान का स्मरण किया गया। साथ ही सदस्यों को सामाजिक, धार्मिक एवं सेवा कार्यों में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में दोनों वरिष्ठ विशेषज्ञ चिकित्सकों के साथ नितेश तिवारी, प्रशांत पाराशर एवं इंटरनल (ईएचसीसी) हॉस्पिटल का आयोजन में सहयोग के लिए सम्मान किया गया। रीजन सचिव नीरज जैन ने बताया कि सम्मान रीजन अध्यक्ष सुनील बज, रीजन कोषाध्यक्ष प्रमोद जैन सोनी, पारस जैन वात्सल्य के संस्थापक अध्यक्ष सुरेश लुहाड़िया, सन्मति के संस्थापक

अध्यक्ष राकेश गोदिका तथा उपस्थित विभिन्न दिगम्बर जैन सोशल ग्रुपों के अध्यक्षों एवं सचिवों द्वारा किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में मुख्य समन्वयक निर्मल-सरला संघी के कुशल संयोजन एवं समर्पण की सराहना की गई। कार्यक्रम का संचालन सुव्यवस्थित ढंग से किया गया तथा अंत में अतिथियों एवं सहभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया। स्वास्थ्य परिचर्चा के बाद सभी उपस्थितजनों ने सहभोज का आनंद लिया। ज्ञान, सेवा और सामाजिक समरसता से परिपूर्ण यह आयोजन फेडरेशन स्थापना दिवस के अवसर पर यादगार एवं प्रेरणादायी रहा।

दुर्गापुरा महिला मंडल ने गोलोक धाम, वर्दा डैम व केशवरायपाटन में मनाया पिकनिक का आनंद

जयपुर. शाबाश इंडिया

दुर्गापुरा महिला मंडल की ओर से 4 अगस्त को गोलोक धाम, वर्दा डैम एवं केशवरायपाटन के लिए एकदिवसीय पिकनिक का आयोजन किया गया। इसमें महिला मंडल की सदस्यों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। पिकनिक की शुरूआत महिला मंडल की सदस्यों ने पूज्य प्रज्ञासागरजी महाराज एवं गणिनी आर्यिका स्वस्तिभूषण माताजी का आशीर्वाद लेकर की। इसके बाद सभी सदस्य प्राकृतिक स्थलों पर पहुंचीं और धार्मिक भावना के साथ भ्रमण का आनंद लिया। इस अवसर पर महिला मंडल की सदस्यों ने आपसी प्रेम, एकजुटता और सहयोग का परिचय दिया। सभी ने भजन-कीर्तन के साथ प्राकृतिक वातावरण का आनंद लिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में महिला मंडल अध्यक्ष रेखा लुहाड़िया, मंत्री रानी सोगानी सहित चंदा सेठी, रेणु पांड्या, रितु चांदवाड, सीमा सेठी, रेखा पाटनी, मोना पाटनी, शिल्पी काला और प्रीति पाटनी का सहयोग रहा। अध्यक्ष रेखा लुहाड़िया एवं मंत्री रानी सोगानी ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया।

हिरोशिमा दिवस

शांति ही मानवता का भविष्य

6 अगस्त को विश्वभर में हिरोशिमा दिवस मनाया जाता है। यही वह दिन है, जब वर्ष 1945 में अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा शहर पर पहला परमाणु बम गिराया था। इस दिन परमाणु हमले में मारे गए लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के साथ विश्व शांति, परमाणु निरस्त्रीकरण और मानवता का संदेश दिया जाता है। लगभग आठ दशक बाद भी हिरोशिमा दिवस केवल इतिहास के स्मरण का अवसर नहीं, बल्कि वर्तमान विश्व को चेतावनी देने वाला दिन भी है। आज दुनिया के विभिन्न हिस्सों में जारी युद्ध, संघर्ष और तनाव वैश्विक शांति के सामने गंभीर चुनौती बने हुए हैं। वास्तव में युद्ध किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं होता, बल्कि वह अनेक नई समस्याओं को जन्म देता है। शांति ही मानवता का सबसे शक्तिशाली अस्त्र है। यही संदेश भगवान गौतम बुद्ध के उपदेशों में भी मिलता है। बौद्ध साहित्य के प्रमुख ग्रंथ 'धम्मपद' में कहा गया है ''न हि वेरेण वेराणि सम्मन्तीध कुदाचनं। अवेरेण च सम्मन्ति, एस धम्मो सनन्तनो।'' अर्थात वैर से वैर कभी समाप्त नहीं होता, वह केवल प्रेम, करुणा और अहिंसा से समाप्त होता है। यही सनातन सत्य है। गौतम बुद्ध का यह संदेश आज के संघर्षग्रस्त विश्व में पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक दिखाई देता है। युद्ध हो, सीमा पर तनाव हो, आतंकवाद हो या किसी भी प्रकार का सशस्त्र संघर्ष, इसकी सबसे बड़ी कीमत अंततः आम नागरिकों को ही चुकानी पड़ती है। निर्दोष लोगों की जान जाती है, लाखों परिवार विस्थापित होते हैं और आने वाली पीढ़ियां भय, असुरक्षा तथा मानसिक आघात के वातावरण में जीवन बिताने को मजबूर होती हैं। हिरोशिमा दिवस हमें याद दिलाता है कि युद्ध का अंतिम परिणाम केवल विनाश है। 6 अगस्त 1945 को हिरोशिमा पर गिराए गए परमाणु बम ने दुनिया को यह भयावह सच्चाई दिखाई कि यदि युद्ध की आग परमाणु हथियारों तक पहुंच जाए तो उसका दुष्परिणाम किसी एक देश या क्षेत्र तक सीमित नहीं रह सकता। ऐसी स्थिति पूरी मानव सभ्यता के अस्तित्व के लिए संकट बन सकती है। हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि युद्ध ने कभी मानवता को नहीं जीता। प्रत्येक युद्ध में मनुष्य ही मनुष्य से लड़ता है और अंततः कोई वास्तविक विजेता नहीं होता।

संपादकीय

राजनीति में नई सोच की जरूरत

भारत जैसे विशाल और विविधतापूर्ण देश में राजनीति सदैव जनजीवन के केंद्र में रही है। लोकतंत्र की जड़ें यहां गहरी हैं, लेकिन समय के साथ राजनीति का स्वरूप और नागरिकों की अपेक्षाएं तेजी से बदल रही हैं। आज देश विकास, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक असमानता जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। ऐसे में पुरानी सोच और पारंपरिक राजनीतिक तौर-तरीकों के सहारे भविष्य की राह तय करना कठिन है। राजनीति में नई सोच अब केवल एक आदर्श नहीं, बल्कि समय की आवश्यकता बन चुकी है। पारंपरिक राजनीति में अक्सर सत्ता के लिए गठजोड़, जाति-धर्म आधारित समीकरण और तात्कालिक राजनीतिक लाभ को प्राथमिकता मिलती रही है।

चुनावों में बड़े-बड़े वादे किए जाते हैं, लेकिन सत्ता में आने के बाद कई बार उनके क्रियान्वयन की गति अपेक्षाओं के अनुरूप नहीं रहती। युवाओं की आकांक्षाएं, महिलाओं की भागीदारी तथा ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच बढ़ती असमानता जैसे विषय राजनीतिक विमर्श में अपेक्षित स्थान नहीं पा पाते। नई सोच का अर्थ ऐसे पुराने ढांचों से आगे बढ़कर समस्या और समाधान केंद्रित राजनीति को अपनाना है। आज की युवा पीढ़ी सूचना और डिजिटल क्रांति के दौर में पली-बढ़ी है। वह पारदर्शिता, जवाबदेही और परिणाम चाहती है। केवल नारेबाजी और आरोप-प्रत्यारोप की राजनीति अब पर्याप्त नहीं है। नई राजनीतिक सोच में आंकड़ों और तथ्यों पर आधारित नीतियां, व्यावहारिक निर्णय तथा दीर्घकालिक दृष्टिकोण शामिल होना चाहिए। शिक्षा को केवल बजट आवंटन तक सीमित रखने के बजाय कौशल विकास, डिजिटल साक्षरता और रोजगार से जोड़ना होगा। स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने के साथ पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन जैसी चुनौतियों को भी राजनीतिक एजेंडे में उचित स्थान देना होगा। नई राजनीति का एक महत्वपूर्ण आधार संवाद और सहयोग की संस्कृति भी होनी चाहिए। संसद और विधानसभाएं जनहित के मुद्दों पर गंभीर चर्चा और समाधान खोजने के मंच हैं। लगातार व्यवधान और नारेबाजी लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा को प्रभावित करते हैं। मतभेद लोकतंत्र का स्वाभाविक हिस्सा हैं, लेकिन उनके बावजूद महत्वपूर्ण राष्ट्रीय और सामाजिक विषयों पर सहमति बनाने की कोशिश होनी चाहिए। विपक्ष की भूमिका केवल विरोध करने तक सीमित न रहे, बल्कि वह रचनात्मक विकल्प और सुझाव भी प्रस्तुत करे। इसी तरह सत्ता पक्ष में भी आलोचना सुनने और सार्थक सुझाव स्वीकार करने की क्षमता होनी चाहिए। क्षेत्रीय असंतुलन भी देश के सामने बड़ी चुनौती है। कुछ क्षेत्र तेजी से आगे बढ़ रहे हैं, जबकि कई हिस्से बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष कर रहे हैं। विकेंद्रीकरण को मजबूत करने, स्थानीय निकायों को पर्याप्त अधिकार और संसाधन देने तथा स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप नीतियां बनाने की जरूरत है। महिलाओं और युवाओं की राजनीति में अधिक भागीदारी भी आवश्यक है। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

ई-20 के बहाने राजनीतिक टकराव

कांतिलाल मांडोत

दिल्ली की राजनीति एक बार फिर उस समय गरमा गई, जब आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक एवं दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने ई-20 ईंधन नीति के विरोध में प्रधानमंत्री आवास तक मार्च निकालने का प्रयास किया। दिल्ली पुलिस ने सुरक्षा कारणों और लागू प्रतिबंधों का हवाला देते हुए उन्हें फिरोजशाह रोड पर रोक दिया। इसके बाद केजरीवाल, मनीष सिसोदिया, संजय सिंह, जैस्मिन शाह सहित अन्य नेता वहीं धरने पर बैठ गए। पार्टी का दावा है कि वह देशभर के दो लाख से अधिक लोगों की चिट्ठियां और याचिकाएं प्रधानमंत्री तक पहुंचाना चाहती थी, जिन्हें बाद में पुलिस अधिकारियों के माध्यम से प्रधानमंत्री कार्यालय भेजा गया। आम आदमी पार्टी का आरोप है कि ई-20 नीति आम उपभोक्ताओं और वाहन मालिकों के हित में नहीं है तथा इसके व्यापक उपयोग से अनेक वाहनों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। पार्टी की मांग है कि उपभोक्ताओं को सामान्य पेट्रोल और ई-20, दोनों विकल्प उपलब्ध होने चाहिए। दूसरी ओर सरकार एथेनॉल मिश्रित ईंधन को कच्चे तेल के आयात पर निर्भरता कम करने, पर्यावरण संरक्षण और किसानों की आय बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताती रही है। स्पष्ट है कि दोनों पक्ष इस नीति को अलग-अलग दृष्टिकोण से देख रहे हैं। इस घटनाक्रम का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू सुरक्षा व्यवस्था और विरोध के लोकतांत्रिक अधिकार से जुड़ा है। प्रधानमंत्री आवास के आसपास का क्षेत्र उच्च सुरक्षा वाला है, जहां बिना अनुमति प्रदर्शन या जुलूस की इजाजत सामान्यतः नहीं होती। ऐसे में पुलिस ने मार्च रोकने को सुरक्षा प्रोटोकॉल का हिस्सा बताया। वहीं आम आदमी पार्टी का तर्क है कि लोकतंत्र में शांतिपूर्ण ढंग से जनता की आवाज सरकार तक पहुंचाने का अधिकार होना चाहिए। सुरक्षा और लोकतांत्रिक अधिकारों के बीच संतुलन की यह चुनौती भारतीय लोकतंत्र में नई नहीं है। राजनीतिक दृष्टि से प्रदर्शन का समय भी महत्वपूर्ण है। विभिन्न राज्यों में चुनावी गतिविधियां तेज होने के बीच राजनीतिक दल जनहित से जुड़े मुद्दों को प्रमुखता से उठा रहे हैं। आम आदमी पार्टी दिल्ली और पंजाब से बाहर राजनीतिक विस्तार की कोशिश में राष्ट्रीय मुद्दों पर स्वयं को मुखर विपक्ष के रूप में प्रस्तुत करना चाहती है। दूसरी ओर भाजपा का आरोप है कि ई-20 के खिलाफ प्रदर्शन जनहित से अधिक राजनीतिक उद्देश्य और चुनावी माहौल में सुर्खियां हासिल करने का प्रयास है। इन राजनीतिक आरोपों से अलग ई-20 नीति स्वयं गंभीर वैज्ञानिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विमर्श की मांग करती है। यदि वाहन मालिकों के सामने तकनीकी अथवा आर्थिक चिंताएं हैं तो सरकार, विशेषज्ञों और वाहन निर्माताओं के बीच व्यापक संवाद होना चाहिए। सरकार यदि नीति को देश के दीर्घकालिक हित में मानती है तो उसके लाभों के साथ संभावित चुनौतियों और उनके समाधान की जानकारी भी पारदर्शिता से जनता के सामने रखी जानी चाहिए। किसी सार्वजनिक नीति की सफलता केवल सरकारी निर्णय से नहीं, बल्कि जनता के विश्वास और सहभागिता से भी तय होती है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में शांतिपूर्ण विरोध का महत्वपूर्ण स्थान है लेकिन राजनीतिक दलों की जिम्मेदारी केवल विरोध तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि उन्हें व्यावहारिक और रचनात्मक विकल्प भी प्रस्तुत करने चाहिए। इसी प्रकार सरकार का दायित्व है कि वह नागरिकों की आशंकाओं को गंभीरता से सुने और संवाद का रास्ता खुला रखे।

सखी गुलाबी नगरी का "स्प्लैश बैश" आयोजन, 200 महिलाओं ने लिया भ्रमण का आनंद

जयपुर. शाबाश इंडिया। महिला संस्था सखी गुलाबी नगरी की ओर से 200 महिलाओं के लिए ''स्प्लैश बैश'' के तहत बिरला सिटी वाटर पार्क भ्रमण का आयोजन किया गया। संस्था की संस्थापक अध्यक्ष सारिका जैन ने बताया कि इस विशेष यात्रा का उद्देश्य महिलाओं को दैनिक जीवन की व्यस्तताओं से कुछ पल दूर मनोरंजन, आपसी सौहार्द और यादगार अनुभव का अवसर प्रदान करना था। सावन के अवसर पर कार्यक्रम की थीम 'लहरिया' रखी गई। सभी सदस्याएं आकर्षक लहरिया परिधानों में शामिल हुईं, जिससे आयोजन में पारंपरिक रंग और उत्साह देखने को मिला। सुबह 6 बजे चार बसों के साथ यात्रा का शुभारंभ हुआ। संस्था की अध्यक्ष सुषमा जैन ने बताया कि सफर के दौरान महिलाओं ने अंताक्षरी, हाउजी और विभिन्न मनोरंजक खेलों में हिस्सा लिया। सावन के गीतों पर नृत्य और हंसी-ठिठोली ने यात्रा को आनंदमय बना दिया। बिरला सिटी वाटर पार्क पहुंचने पर सभी ने वेव पूल, वाटर स्लाइड्स, रेन डांस और डीजे की धुनों का आनंद लिया। भ्रमण के दौरान डंपिंग यार्ड, जिनशासन मंदिर एवं नारेली जैन तीर्थ के दर्शन भी किए गए। डंपिंग यार्ड की वादियों में सदस्याओं ने ग्रुप फोटोग्राफी, सेल्फी और रील्स के माध्यम से यात्रा के पलों को कैमरे में संजोया। इस दौरान आचार्य परंपरा के संत निष्पक्षसागरजी महाराज एवं निष्पृहसागरजी महाराज के दर्शन कर सभी ने आशीर्वाद प्राप्त किया। संस्था की सचिव ममता सेठी ने बताया कि आयोजन में संस्था के पदाधिकारियों एवं कार्यकारिणी टीम का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम संस्थापक अध्यक्ष सारिका जैन के नेतृत्व में संपन्न हुआ। आयोजन में कोगटा फाइनेंशियल की ओर से लैपटॉप बैग, जेआईपी/जय विलास की ओर से सभी सदस्यों के लिए पूल टी-शर्ट तथा टाटा क्रॉसलैंड की ओर से नाश्ते की व्यवस्था में सहयोग किया गया। कार्यक्रम के संचालन में उपाध्यक्ष अनिता जैन एवं स्वाति जैन, कोषाध्यक्ष सरोज जैन, सांस्कृतिक मंत्री आशा जैन, जनसंपर्क अधिकारी सुनीता कसेरा, मीटिंग कोऑर्डिनेटर दिव्या जैन सहित कार्यकारिणी सदस्य निकिता जैन, रानी पाटनी, अंकिता जैन, अनिला जैन, मोनिका जैन, प्रिया जैन एवं रिचा जैन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। टीम ने यात्रा के दौरान हाउजी, मनोरंजक खेल एवं सरप्राइज गतिविधियों का आयोजन कर सभी का उत्साह बनाए रखा। बस कोऑर्डिनेटर रश्मि सेठी, सुनीता जैन, विनीता जैन, शिखा जैन, नीता बज एवं अरुणा जैन ने यात्रा के दौरान सदस्यों के बीच समन्वय किया। साथ ही महिलाओं को सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने का संदेश दिया। यात्रा के समापन पर संस्था की ओर से सभी सदस्याओं को स्मृति चिह्न के रूप में छाता भेंट किया गया। मनोरंजन, आध्यात्मिकता, मित्रता और सामाजिक सहभागिता के संगम के साथ यात्रा का समापन हुआ।

लायंस क्लब जयपुर स्पार्कल ने पौधरोपण कर दिया पर्यावरण संरक्षण का संदेश

जयपुर. शाबाश इंडिया

लायंस क्लब जयपुर स्पार्कल की ओर से 5 अगस्त को गोपालपुरा बायपास स्थित मंगल विहार कॉलोनी के शिव मंदिर उद्यान में पौधरोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रजातियों के पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया। कार्यक्रम के तहत कल्पवृक्ष, नीम, कनेर, हरसिंगार, बेलपत्र, कदंब और मोगनी सहित विभिन्न प्रजातियों के बड़े पौधे लगाए गए। इनमें 2 कल्पवृक्ष के पौधों की सुरक्षा के लिए ट्री गार्ड भी लगाए गए। मंदिर के पुजारी ने लगाए गए पौधों की नियमित देखरेख और संरक्षण का आश्वासन दिया। इस अवसर पर क्लब अध्यक्ष ला. राधा रानी मित्तल, कोषाध्यक्ष ला. रश्मि भार्गव, ला. मंजू पुरी, पूर्व अध्यक्ष ला. सुजाता स्वर्णकार के साथ रीजन-05 की रीजन चेयरपर्सन ला. उपमा सारस्वत एवं जोन चेयरपर्सन ला. रानी पाटनी उपस्थित रहीं। सभी ने पौधरोपण के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण और हरियाली बढ़ाने का संदेश दिया।

टेंट व्यवसाय संघ की नई कार्यकारिणी गठित, बाबूलाल माली बने निर्विरोध अध्यक्ष

भीनमाल. शाबाश इंडिया

स्थानीय क्षेमंकरी माताजी मंदिर की तलहटी में बुधवार को टेंट व्यवसाय संघ की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। इसमें सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का गठन करते हुए बाबूलाल माली को निर्विरोध अध्यक्ष चुना गया। बैठक में संगठन की मजबूती और व्यापारियों के हितों की रक्षा को लेकर भी चर्चा की गई। नई कार्यकारिणी में मोहब्बत सिंह राव, राजमल परमार एवं विकास जैन को संरक्षक बनाया गया। बाबूलाल माली को अध्यक्ष, ओबाराम देवासी, बाबूलाल राजपुरोहित एवं जगदीश सिंह राव को उपाध्यक्ष, चालूराम देवासी को कोषाध्यक्ष, रिडमल सिंह कुशलपुरा को उपकोषाध्यक्ष, कुयाराम माली दासपा को सचिव, रमेश मेघवाल को सहसचिव, कानाराम पुरोहित को महामंत्री, रमेश खान एवं रेखाराम रांगी को प्रचार मंत्री तथा लाखाराम देवासी दातिवास को संगठन मंत्री नियुक्त किया गया। इसी प्रकार नरपत पुरोहित भादरड़ा, कैलाश पुरोहित, हरि सिंह निंबावास, जगतराम, रमेश लेदरमर एवं गंगनाराम चौधरी को मनोनीत सदस्य बनाया गया। नवनिर्वाचित अध्यक्ष बाबूलाल माली ने सभी का आभार जताते हुए कहा कि वे संगठन में एकता बनाए रखते हुए सभी को साथ लेकर व्यापार हित में कार्य करेंगे। सचिव कुयाराम माली ने टेंट व्यवसाय से जुड़ी विभिन्न समस्याओं के सामूहिक समाधान पर जोर दिया। कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों ने अपना परिचय दिया। इस दौरान महेंद्र भाई सुथार, परबत सिंह, रवि कुमार परमार, उत्तम सिंह, ईश्वर सिंह, नवल सिंह, दाऊद खान, शौकत खान, हरस कुमार कोरा और हरीश कुमार सहित भीनमाल तहसील एवं आसपास के गांवों से बड़ी संख्या में टेंट व्यवसायी उपस्थित रहे।

एम्बीशन किड्स एकेडमी में फायरलेस कुकिंग एक्टिविटी, विद्यार्थियों ने दिखाई पाक-कला में रचनात्मकता

जयपुर. शाबाश इंडिया

एम्बीशन किड्स एकेडमी में शनिवार को प्राइमरी और मिडिल कक्षाओं के विद्यार्थियों के लिए फायरलेस कुकिंग एक्टिविटी का आयोजन किया गया। गतिविधि का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वस्थ खान-पान की आदतें, स्वच्छता, पोषण के प्रति जागरूकता, रचनात्मकता, आत्मनिर्भरता तथा टीम वर्क की भावना विकसित करना था। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने बिना आग का प्रयोग किए स्वाद संगम सैंडविच, ट्राई कलर कोकोनट डिलाइट डिश, हेल्दी चाट जेम्स, चोको ओरियो ट्रीट केक सहित विभिन्न स्वादिष्ट एवं पौष्टिक व्यंजन तैयार किए। बच्चों ने व्यंजनों को कलात्मक ढंग से

सजाकर प्रस्तुत किया, जिसकी उपस्थितजनों ने सराहना की। निर्णायक मंडल ने विद्यार्थियों द्वारा तैयार व्यंजनों का स्वाद, पौष्टिकता, स्वच्छता, प्रस्तुतीकरण एवं रचनात्मकता के आधार पर मूल्यांकन किया। गतिविधि के माध्यम से विद्यार्थियों ने स्वस्थ भोजन के महत्व को समझने के साथ आत्मविश्वास से अपनी पाक-कला का प्रदर्शन किया। इससे पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ चेयरमैन डॉ. मणि एवं डॉ. शांति मणि ने संयुक्त रूप से मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। विद्यालय के निदेशक डॉ. मनीष जैन एवं प्राचार्या डॉ. अलका जैन ने विद्यार्थियों के उत्साह, नवाचार एवं प्रदर्शन की सराहना करते हुए कहा कि ऐसी गतिविधियां बच्चों के सर्वांगीण विकास के साथ जीवनोपयोगी कौशल विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने सभी प्रतिभागियों एवं शिक्षकों को सफल आयोजन के लिए बधाई दी। उपाचार्य अनीता जैन ने बताया कि कार्यक्रम का समापन विद्यार्थियों द्वारा तैयार पौष्टिक व्यंजनों का स्वाद लेने और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने के संदेश के साथ हुआ। विद्यालय प्रबंधन ने भविष्य में भी इस प्रकार की शिक्षाप्रद एवं रचनात्मक गतिविधियां आयोजित करने की बात कही।

क्रोध, मान जैसी कषायों के वशीभूत होकर आज भी कर रहे निकृष्ट कर्मों का संचय : मुनि पुंगव सुधासागरजी

युवाओं को पूज्य मुनिश्री के चरणों की सेवा और निकटता का सौभाग्य मिले, ऐसा आयोजन करेंगे : आनंद गोधा

देश-विदेश का कोई भी श्रावक प्राप्त कर सकता है भक्ति कलश स्थापित करने का सौभाग्य : विजय धुर्रा

अशोकनगर. शाबाश इंडिया

क्रोध, मान, माया और लोभ जैसी कषायों के वशीभूत होकर हम आज भी निरंतर निकृष्ट कर्मों का संचय कर रहे हैं। इससे बचने के लिए इस चातुर्मास में प्रयास करें और मंगलमय देशना के माध्यम से अपने जीवन को सुधारने की दिशा में कदम बढ़ाएं। क्रोध को तो आप कषाय मानते हैं, लेकिन मान को पाप नहीं समझते। आप सोचते हैं कि मैं इस योग्य हूं, तभी लोग मुझे जय जिनेन्द्र कर रहे हैं। स्थिति सभी की लगभग एक जैसी है। अपने घर में मजदूर भी हुकूमत दिखाता है तो उसका अहंकार भी सातवें आसमान पर होता है। यह आपको समझ में नहीं आता या यूं कहें कि आप समझना नहीं चाहते। इन कषायों से बचने के लिए इन्हें अच्छी तरह समझना होगा, तभी हम निकृष्टता से बाहर निकलकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बना सकेंगे। ये उद्गार राष्ट्रसंत एवं राजकीय अतिथि मुनि पुंगव सुधासागरजी महाराज ने दलाल बाग में विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

देश-विदेश के भक्तों को मिलेगा भक्ति कलश स्थापित करने का सौभाग्य

इंदौर से लौटने के बाद मध्यप्रदेश महासभा के संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव राष्ट्रसंत सुधासागरजी महाराज ससंघ 18 पिच्छिकाओं का मंगल चातुर्मास इंदौर महानगर में हो रहा है। गुरुदेव के चातुर्मास की कृपा एवं ऊर्जा भक्तों के घर तक पहुंचे, इसके लिए भक्ति कलश स्थापित करने की व्यवस्था की गई है। उन्होंने बताया कि कमेटी ने निर्णय लिया है कि देश-विदेश का कोई भी श्रावक भक्ति कलश स्थापित करने का सौभाग्य प्राप्त कर सकता है। इसके लिए इंदौर में उपस्थित होना भी आवश्यक नहीं है। भक्ति कलश स्थापित करने वाले भक्तों को पाद प्रक्षालन, चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन एवं शास्त्र भेंट जैसे धार्मिक कार्यक्रमों में सहभागिता का सौभाग्य भी प्राप्त होगा। धुर्रा ने कहा कि जो भक्त अपनी ओर से भक्ति कलश स्थापित करना चाहते हैं, वे अपना नाम समिति तक पहुंचा सकते हैं। दीपावली के अवसर पर उन्हें गुरुदेव के चातुर्मास की ऊर्जा से परिपूर्ण कलश को अपने घर ले जाने का अवसर मिलेगा।

युवाओं के लिए विशेष कार्यशाला आयोजित करने की तैयारी

सामाजिक संसद इंदौर जैन समाज के अध्यक्ष आनंद नवीन गोधा ने कहा कि इंदौर युवाओं का शहर माना जाता है। पूरे मध्यप्रदेश

के साथ देशभर से युवा यहां शिक्षा ग्रहण करने आते हैं और शहर शिक्षा के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है। ऐसे में इन युवाओं के कल्याण और उनके जीवन को सही दिशा देने के लिए गुरुदेव के सान्निध्य में विशेष आयोजन होना चाहिए। उन्होंने युवाओं के लिए रविवार को विशेष कार्यशाला आयोजित करने की भावना व्यक्त करते हुए कहा कि इससे मध्यप्रदेश के साथ देशभर के जैन समाज के युवाओं को लाभ मिल सकेगा। चातुर्मास कमेटी इस प्रकार के आयोजनों के लिए उत्सुक है और धर्म प्रभावना समिति इसके लिए आवश्यक व्यवस्थाएं करेगी। आगामी कार्यक्रम निर्धारित होते ही शहरवासियों के साथ प्रदेश और देशभर के श्रद्धालुओं को सीधे प्रसारण सहित अन्य माध्यमों से सूचना दी जाएगी।

क्या बनना है, यही तय नहीं तो मंजिल कैसे मिलेगी

धर्मसभा में मुनिश्री ने कहा कि सवाल यह नहीं है कि तुम अच्छा नहीं बनना चाहते, सवाल यह है कि अच्छा क्यों नहीं बन पा रहे हो? सवाल यह नहीं कि तुम धनी नहीं बनना चाहते, बल्कि यह है कि धनवान क्यों नहीं बन पा रहे हो? सवाल यह नहीं कि तुम श्रेष्ठी नहीं बनना चाहते, बल्कि यह है कि श्रेष्ठी क्यों नहीं बन पा रहे हो? इसी प्रकार सवाल यह नहीं है कि तुम धर्म नहीं करना चाहते, सवाल यह है कि धर्मात्मा क्यों नहीं बन पा रहे हो? उन्होंने कहा कि मनुष्य के भीतर ऊंचाइयों को प्राप्त करने और श्रेष्ठ बनने की इच्छा है। कई युवा आकर पूछते हैं कि महाराज, मुझे कौन-सा विषय लेना चाहिए, किस क्षेत्र में जाना चाहिए या कौन-सा व्यवसाय करना चाहिए। वास्तविकता यह है कि आज का युवा स्वयं जानता है कि किस क्षेत्र में कितना अवसर है और कौन-सा कार्य उसके लिए अच्छा हो सकता है। युवाओं की इच्छाएं ऊंची हैं। यहां बुरी इच्छाओं की नहीं, बल्कि उन अच्छी इच्छाओं की चर्चा हो रही है, जिन्हें धर्म और गुरु भी श्रेष्ठ मानते हैं।

सब कुछ अच्छा चाहते हो तो गुरु की खोज करो

मुनिश्री ने कहा कि गुरु की खोज इसलिए करनी चाहिए कि हम सब कुछ अच्छा चाहते हैं, लेकिन प्रश्न यह है कि हमारे भीतर अच्छा घटित क्यों नहीं होता? हम चाहते हैं कि हमारा मन अच्छा सोचे, फिर भी उसमें बुरे विचार क्यों आते हैं? मन स्वयं का है, फिर भी वह अपने नियंत्रण में नहीं है तो संसार को अपने नियंत्रण में कैसे कर सकते हैं? उन्होंने कहा कि लोग कहते हैं कि उनका पड़ोसी अनुकूल नहीं है, परिवार अनुकूल नहीं है, किस्मत साथ नहीं दे रही और कोई उनकी चिंता नहीं कर रहा। संसार में जो परिस्थितियां प्रतिकूल हैं, उन्हें अनुकूल बनाने की चिंता गुरु पर छोड़ दो, लेकिन जो तुम्हारा अपना मन है, उसे अपने अनुकूल बनाने का प्रयास स्वयं करो। मुनिश्री ने कहा कि मन तुम्हारा अपना है, उसे नियंत्रित करना तुम्हारी जिम्मेदारी है। साधु अपनी और अपने भक्तों की किस्मत बदलने की क्षमता रखता है। गुरु कोई साधारण हस्ती नहीं है। जीवन की प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच अपने मन को साधना और उसे सही दिशा देना ही व्यक्ति को श्रेष्ठता की ओर ले जाता है।

‘हम 8 साथ ग्रुप’ ने मंदिर परिसर में लगाया वाटर कूलर

जयपुर. शाबाश इंडिया

डिग्गी रोड स्थित श्रीजी नगर के अरिहंत विहार स्थित श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर परिसर में बुधवार को ''हम 8 साथ ग्रुप'' की ओर से शीतल पेयजल की सुविधा के लिए वाटर कूलर लगाया गया। मंदिर समिति से जुड़े अशोक जैन गुढ़ाचंद्रजी ने बताया कि 'हम 8 साथ ग्रुप' की समाजसेविका रश्मि छाबड़ा, रितु जैन, सारिका जैन, सीमा गोधा, निधि जैन, विनीता अजमेरा और रमिता बड़जात्या सहित ग्रुप की आठ महिलाओं ने मिलकर यह सेवा कार्य किया। उन्होंने बताया कि ग्रुप की सभी महिलाएं मिलकर प्रत्येक माह एक सामाजिक सेवा का कार्य करती हैं। इस अवसर पर कॉलोनी की सदस्याओं ने 'हम 8 साथ ग्रुप' की महिलाओं का स्वागत किया। मंदिर परिसर में वाटर कूलर की सुविधा उपलब्ध होने से यहां प्रतिदिन आने वाले दर्शनार्थियों एवं राहगीरों को शीतल पेयजल की सुविधा मिल सकेगी।

हर मास एक उपवास से बढ़ता है आत्मविश्वास : अंतर्मना आचार्य प्रसन्नसागरजी

पुष्पगिरी सोनकच्छ. शाबाश इंडिया

पुष्पगिरी तीर्थ प्रणेता गणाचार्य पुष्पदंतसागरजी महाराज के सान्निध्य में अंतर्मना आचार्य प्रसन्नसागरजी महाराज एवं उपाध्याय पीयूषसागरजी महाराज ससंघ पुष्पगिरी में वर्षायोग के लिए विराजमान हैं। उनके सान्निध्य में विभिन्न धार्मिक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी क्रम में गुरु भक्तों को संबोधित करते हुए आचार्य प्रसन्नसागरजी महाराज ने कहा कि शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पेट और पाचन तंत्र को समय-समय पर विश्राम देना आवश्यक है। इसके लिए हर माह एक उपवास करना उपयोगी हो सकता है। उन्होंने कहा, तन की भूख भोजन, मन की भूख संकल्प और चेतना की भूख उपवास है। आचार्यश्री ने कहा कि व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार उपवास करना चाहिए। नियमित अंतराल पर उपवास करने से आत्मनियंत्रण और मन की एकाग्रता बढ़ाने में सहायता मिलती है। शरीर को विश्राम मिलने के साथ व्यक्ति स्वयं को हल्का और ऊर्जावान अनुभव कर सकता है। उन्होंने उपवास को तन और मन के अनुशासन के साथ आध्यात्मिक साधना का भी महत्वपूर्ण माध्यम बताया। उन्होंने कहा कि उपवास केवल भोजन का त्याग नहीं, बल्कि आत्मसंयम और चेतना के विकास की साधना है। इससे मन शांत होता है और व्यक्ति आत्मचिंतन की ओर अग्रसर होता है। उन्होंने ''व्रत एक, लाभ अनेक'' का संदेश देते हुए हर माह एक उपवास अपनाने की प्रेरणा दी। प्रचार-प्रसार संयोजक रोमिल पाटणी सोनकच्छ, नरेंद्र अजमेरा एवं पीयूष कासलीवाल औरंगाबाद ने यह जानकारी दी।

जनकपुरी में आचार्य आदित्यसागर महाराज करा रहे ''रत्नकरण्ड श्रावकाचार'' ग्रंथ का स्वाध्याय

जयपुर. शाबाश इंडिया

जनकपुरी ज्योतिनगर स्थित जैन मंदिर में चातुर्मास कर रहे आचार्य आदित्यसागरजी महाराज नित्य प्रातः जैन धर्म के प्रसिद्ध एवं प्राचीन ग्रंथ ''रत्नकरण्ड श्रावकाचार'' का सरल भाषा में अर्थ समझाते हुए श्रद्धालुओं को स्वाध्याय करा रहे हैं। 'रत्नकरण्ड श्रावकाचार' जैन धर्म का प्रसिद्ध प्राचीन ग्रंथ है, जिसकी रचना आचार्य समन्तभद्र स्वामी ने की थी। ग्रंथ में गृहस्थ जीवन जीने वाले जैन श्रावकों के आचरण, धर्म एवं उनके पालन योग्य कर्तव्यों का 150 श्लोकों में वर्णन किया गया है। आचार्य आदित्यसागरजी महाराज स्वाध्याय के दौरान प्रत्येक श्लोक का अर्थ सरल एवं विस्तारपूर्वक समझा रहे हैं। बुधवार को उन्होंने छठे श्लोक में वर्णित 18 दोषों की व्याख्या करते हुए आहार एवं भूख विषय को विस्तार से समझाया। प्रवचन नित्य गुरु पूजन एवं मंगलाचरण के साथ प्रारंभ होते हैं और जिनवाणी स्तुति के साथ संपन्न होते हैं। बड़ी संख्या में श्रद्धालु प्रतिदिन स्वाध्याय एवं प्रवचन का धर्मलाभ ले रहे हैं।

महिला मंडल ने निकाली भव्य शोभायात्रा, णमोकार महामंत्र के जाप से गूंजा जिनालय

आर्यिका संगममति माताजी के सान्निध्य में महिलाओं ने दिया भक्ति, संस्कार और आत्मकल्याण का संदेश

अम्बाह. शाबाश इंडिया। नगर में चातुर्मास कर रहीं गणिनी आर्यिका रत्न 105 संगममति माताजी के सान्निध्य में बुधवार को दिगंबर जैन सोशल ग्रुप महिला मंडल की ओर से धार्मिक आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरूआत नगर के प्रमुख बाजार से बैंड-बाजों के साथ निकाली गई शोभायात्रा से हुई। महिलाएं धार्मिक ध्वज और मंगल कलश लेकर भक्ति गीतों के साथ जयघोष करती हुई जैन बगीचा पहुंचीं। शोभायात्रा के दौरान पूरे मार्ग में धर्ममय वातावरण बना रहा। इसके बाद महिलाओं ने एक घंटे तक सामूहिक रूप से णमोकार महामंत्र का जाप कर विश्व शांति, राष्ट्र की समृद्धि, आत्मकल्याण एवं समस्त जीवों के मंगल की कामना की। मंगल प्रवचन में आर्यिका संगममति माताजी ने कहा कि णमोकार महामंत्र जैन धर्म का मूल महामंत्र है। यह किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि पंच परमेष्ठी के दिव्य गुणों का वंदन है। इस महामंत्र में आत्मा को निर्मल बनाने, विकारों को दूर करने और जीवन को सही दिशा देने की अद्भुत शक्ति है। श्रद्धा और नियमित साधना के साथ इसका जाप करने से क्रोध, मान, माया और लोभ जैसी कषाय क्षीण होती हैं तथा आत्मा में शांति, संयम और समता का विकास होता है। माताजी ने कहा कि प्रत्येक माता का दायित्व है कि वह बच्चों को बचपन से ही सत्य, अहिंसा, करुणा, विनम्रता, अनुशासन और धर्म के संस्कार दे। परिवार संस्कारित होगा, तभी समाज और राष्ट्र भी मजबूत होगा। धर्म का वास्तविक स्वरूप केवल पूजा-अर्चना तक सीमित नहीं है, बल्कि वह श्रेष्ठ आचरण और सद्व्यवहार में दिखाई देना चाहिए। प्रेम, क्षमा, दया और सेवा की भावना ही सच्ची आराधना है। उन्होंने महिलाओं से परिवार में धार्मिक वातावरण बनाए रखने, बच्चों को अच्छे संस्कार देने तथा प्रतिदिन स्वाध्याय, सामायिक और णमोकार महामंत्र के जाप के लिए समय निकालने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि चातुर्मास आत्मचिंतन, आत्मसंयम और धर्म साधना का विशेष अवसर है, जिसका प्रत्येक व्यक्ति को लाभ लेना चाहिए।

महावीर इंटरनेशनल ने विद्यार्थियों व शिक्षकों को बताए सेवा कार्य, जीवन रक्षक किट किए वितरित

गढ़ी परतापुर. शाबाश इंडिया

महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर की ओर से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय घाणेवा में संस्था की विभिन्न सेवा गतिविधियों की जानकारी साझा की गई। इस दौरान बेबी किट व सेनेटरी नेपकिन वितरण, पौधरोपण, नेत्रदान, मरणोपरांत देहदान, रात्रिकालीन ई-चौपाल और नेत्र चिकित्सा शिविर सहित विभिन्न सेवा कार्यों के बारे में बताया गया। समारोह की अध्यक्षता संस्था प्रधान नितिन कुमार जैन ने की। मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता इंटरनेशनल डायरेक्टर नॉलेज शेयरिंग एवं ई-चौपाल अजीत कोठिया रहे। प्रारंभ में स्टाफ सदस्यों ने अतिथियों का स्वागत किया। प्रधानाचार्य नितिन कुमार जैन ने सेवा कार्यों की जानकारी साझा करने के लिए सुदूर जनजातीय क्षेत्र में स्थित विद्यालय का चयन करने पर महावीर इंटरनेशनल गढ़ी परतापुर का आभार जताया। कार्यक्रम में कोठिया ने आकस्मिक हृदयाघात जैसी आपात स्थिति के मद्देनजर स्टाफ सदस्यों को तीन दवाओं वाली जीवन रक्षक किट प्रदान की। उन्होंने किट में उपलब्ध दवाओं एवं उनके उपयोग के संबंध में जानकारी देते हुए आपात स्थिति में तत्काल चिकित्सकीय सहायता लेने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। इस अवसर पर स्टाफ सदस्यों को बायपास सर्जरी, नेत्र लेंस प्रत्यारोपण, पेट एवं लीवर रोग तथा घुटने संबंधी समस्याओं के उपचार के लिए महावीर इंटरनेशनल की ओर से आयोजित किए जाने वाले चिकित्सा शिविरों की जानकारी दी गई।

आत्मा का सर्वश्रेष्ठ गुण अक्षय अनंत सुख: आचार्य कनकनंदी

सागवाड़ा. शाबाश इंडिया

वैज्ञानिक धर्माचार्य आचार्य कनकनंदी गुरुदेव ने पुनर्वास कॉलोनी सागवाड़ा से आयोजित अंतरराष्ट्रीय वेबिनार में आत्मा के अक्षय, अनंत स्वरूप एवं गुणों पर उद्बोधन दिया। उन्होंने कहा कि आत्मा अमूर्तिक, चैतन्य स्वरूप एवं आनंदघन रूप है। आचार्यश्री ने कहा कि जिस प्रकार दीपक स्वयं प्रकाशित होता है और दूसरों को भी प्रकाशित करता है, उसी प्रकार आत्मा अपने चेतना गुण के माध्यम से स्वयं को एवं दूसरों को जानती और अनुभव करती है। इसलिए शास्त्रों में कहा गया है कि आत्मा को स्वसंवेदन के माध्यम से स्पष्ट रूप से जाना जाता है। उन्होंने कहा कि आत्मा स्वतंत्र द्रव्य है। द्रव्य उत्पाद और व्यय से युक्त होते हुए भी ध्रौव्य होने के कारण नित्य है। संसारी जीव जिस शरीर को प्राप्त करता है, आत्मा अपने संकोच-विस्तार गुण के कारण उस शरीर में पूर्ण रूप से व्याप्त होकर रहती है। आचार्य कनकनंदी ने कहा कि आत्मा का सर्वश्रेष्ठ गुण अक्षय अनंत सुख है। इसी गुण के कारण जीव अन्य द्रव्यों से श्रेष्ठ है। अनंत ज्ञान के माध्यम से जीव समस्त लोक और अलोक को जानने में समर्थ होता है। उन्होंने कहा कि आत्मा अनेक प्रकार के ज्ञान स्वरूप होने से अनेकात्मक है, वहीं चेतना स्वभाव की दृष्टि से एक है। इस प्रकार आत्मा को केवल एक रूप में नहीं, बल्कि एक तथा अनेकात्मक स्वरूप में समझना चाहिए। यह जानकारी विजयलक्ष्मी गोदावत सागवाड़ा ने दी।

20 वर्षों से निरंतर निकल रही चेतन तीर्थ यात्रा का बैनर विमोचन, 9 अगस्त को होगा आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

भारतीय जैन युवा परिषद् की ओर से 9 अगस्त को जयपुर शहर सहित बीलवा, गुन्सी, गोलोकधाम, निवाई एवं बाड़ा पदमपुरा तक चेतन तीर्थ यात्रा का आयोजन किया जाएगा। यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं को बसों के माध्यम से विभिन्न स्थानों पर विराजमान मुनिराजों एवं आर्यिकाओं के दर्शन का लाभ मिलेगा। इसी क्रम में बुधवार को गोपालपुरा बायपास रोड स्थित श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर, मंगल विहार में आर्यिका अर्हमश्री माताजी के सान्निध्य में चेतन तीर्थ यात्रा के बैनर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर समाजसेवी प्रमोद पहाड़िया, युवा परिषद् के परम शिरोमणि

संरक्षक विनय-स्नेहलता सोगानी, मंदिर समिति के सदस्य एवं समाजबंधु उपस्थित रहे। यात्रा का शुभारंभ इसी मंदिर से होगा और अंतिम पड़ाव बाड़ा पदमपुरा रहेगा। प्रदेश अध्यक्ष देवेंद्र बोहरा लाखना एवं महामंत्री रवि रांवका ने बताया कि चेतन तीर्थ यात्रा पिछले 20 वर्षों से निरंतर आयोजित की जा रही है। उपाध्यक्ष नेमीचंद छाबड़ा, विजय जैन खटवाड़ा एवं अनिल पाटनी ने बताया कि श्रद्धालुओं को इस यात्रा का वर्षभर इंतजार रहता है। कोषाध्यक्ष राकेश काला ने बताया कि चातुर्मास के दौरान विभिन्न स्थानों पर जाकर दर्शन नहीं कर पाने वाले श्रद्धालुओं को एक ही दिन में अधिक से अधिक धर्मलाभ दिलाने के उद्देश्य से यह यात्रा आयोजित की जाती है। जिला अध्यक्ष योगेश बड़जात्या ने कहा कि यात्रा के दौरान पूरे दिन धर्ममय वातावरण रहता है। मुख्य संयोजक विनोद जैन लदाना एवं आलोक पाटनी ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। इस अवसर पर शेखर रतन सोगानी, अनिल पाटनी चोरू, मिथिलेश जैन, ममता बोहरा, अंकिता जैन, संतोष बाकलीवाल, सरला सेठी और संजय सेठी सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित रहे। आयोजन समिति ने बताया कि यात्रा में शहर से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है। समिति ने धर्मानुरागी बंधुओं से सपरिवार यात्रा में शामिल होकर मुनिराजों एवं आर्यिकाओं के दर्शन और मंगल आशीर्वाद का लाभ लेने का आह्वान किया।

महावीर इंटरनेशनल वीरा सन्मति कुकनवाली द्वारा बेबी किट एवं सेनेटरी नैपकिन वितरित

कुकनवाली. शाबाश इंडिया

''सबकी सेवा, सबको प्यार-जीवो और जीने दो'' तथा ''दोस्ती से सेवा'' के उद्देश्य को साकार करते हुए महावीर इंटरनेशनल वीरा सन्मति, कुकनवाली द्वारा आज सेवा कार्यों की श्रृंखला में राजकीय चिकित्सालय एवं महात्मा गांधी राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कुकनवाली में दो महत्वपूर्ण जनकल्याणकारी कार्यक्रम आयोजित किए गए। राजकीय चिकित्सालय में संस्था के वात्सल्य प्रोजेक्ट के अंतर्गत नवजात शिशुओं की माताओं को शिशु की उचित देखभाल, स्तनपान का महत्व, स्वच्छता तथा संक्रमण से बचाव संबंधी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई। साथ ही सुरक्षित एवं स्वच्छ मातृत्व के प्रति जागरूक करते हुए नवजात शिशुओं के लिए हाइजीनिक बेबी किट वितरित किए गए। इसके पश्चात महात्मा गांधी राजकीय सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कुकनवाली में गरिमा प्रोजेक्ट के तहत किशोरियों को मासिक धर्म के दौरान स्वच्छता, संक्रमण से बचाव एवं स्वास्थ्य संबंधी आवश्यक जानकारी दी गई। इस अवसर पर छात्राओं को ''झिझक छोड़ो, चुप्पी तोड़ो, खुलकर बोलो'' का प्रेरक संदेश देते हुए सेनेटरी नैपकिन वितरित किए गए। इस सेवा अभियान में संस्था की अध्यक्षा उर्मिला सेठी सहित संतोष, प्रेम, बबीता, मधु, सोनू सेठी, शकुंतला, मीणा काला, मीनू पाटनी एवं संतोष वैद ने सक्रिय सहभागिता निभाते हुए अपना अमूल्य समय देकर सेवा कार्यों को सफल बनाया।

वर्द्धमान की शैक्षणिक व्यवस्थाओं का विद्या भारती चित्तौड़ प्रांत के पदाधिकारियों ने किया अवलोकन

ब्यावर. शाबाश इंडिया

श्री वर्द्धमान शिक्षण समिति की ओर से संचालित श्री वर्द्धमान कन्या महाविद्यालय, वर्द्धमान गर्ल्स स्कूल, वर्द्धमान रूट्स तथा वर्द्धमान फैशन डिजाइन एवं मेकअप आर्टिस्ट संस्थान सहित विभिन्न शैक्षणिक इकाइयों का विद्या भारती चित्तौड़ प्रांत के पदाधिकारियों एवं जिला प्रवासियों ने अवलोकन किया। इस दौरान आयोजित समारोह में प्राचार्य डॉ. आर.सी. लोढ़ा ने अतिथियों का माल्यार्पण कर एवं स्मारिका भेंट कर स्वागत किया। कार्यक्रम में प्रांत निरीक्षक नवीन कुमार झा, प्रांत सचिव श्मानेंगे जी पटेल, विद्या भारती संस्थान अजमेर के जिला मंत्री मनोज कुमार टेलर तथा ब्यावर विद्यालय प्रबंध समिति अध्यक्ष रमेश चंद्र भराडिया सहित चित्तौड़ प्रांत के अंतर्गत आने वाले 12 जिलों के जिला प्रवासी शामिल हुए। पदाधिकारियों ने महाविद्यालय में संचालित बीसीए, विज्ञान, योग, संगीत, फैशन डिजाइन एवं मेकअप आर्टिस्ट जैसे रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों के साथ प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय, वातानुकूलित परिसर एवं छात्रा-केंद्रित शिक्षण व्यवस्थाओं का अवलोकन किया। उन्होंने सुलभ शुल्क पर आधुनिक शैक्षणिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के प्रयासों की सराहना की। साथ ही महिला शिक्षा, कौशल विकास, तकनीकी शिक्षा एवं व्यक्तित्व निर्माण के क्षेत्र में समिति द्वारा किए जा रहे कार्यों को महत्वपूर्ण बताया। प्राचार्य डॉ. आर.सी. लोढ़ा ने कहा कि अनुभवी शिक्षाविदों का मार्गदर्शन शिक्षा की गुणवत्ता, संस्कारों के संवर्धन एवं संगठनात्मक कार्यों को नई दिशा प्रदान करता है। उन्होंने पदाधिकारियों एवं 12 जिलों से आए जिला प्रवासियों के प्रति आभार जताया। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रहित में शिक्षा एवं संस्कारों के प्रसार के सामूहिक संकल्प के साथ हुआ।

बढ़ते ब्लड शुगर को कंट्रोल करता है ये मीठा ड्राई फ्रूट

पानी में भिगोकर सेवन करने से सेहत को मिलते हैं और कई फायदे

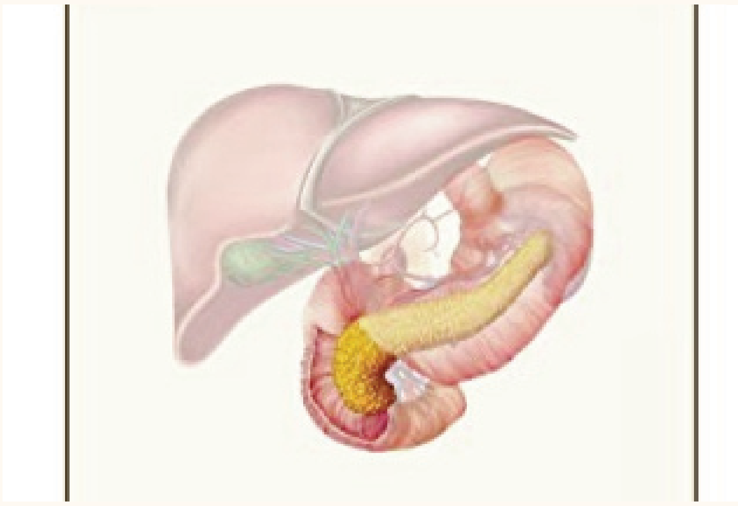

डायबिटीज में इस ड्राई फ्रूट का सेवन सेहत के लिए कई प्रकार से फायदेमंद है। ये मेटाबोलिक गतिविधियों को बढ़ाता है और फिर शुगर कंट्रोल करने में मदद करता है।

डायबिटीज में अंजीर का सेवन: ब्लड शुगर बढ़ने से लोग डायबिटीज जैसी गंभीर बीमारी की चपेट में आने लगते हैं। इस बीमारी में मरीजों को मीठा खाने की सख्त मनाही होती है। क्योंकि, मीठी चीजें शुगर लेवल को तेजी से बढ़ाती हैं। लेकिन, एक ड्राईफ्रूट है जो स्वाद में मीठा है और डायबिटीज के मरीज इसका सेवन भी कर सकते हैं। हम बात कर रहे हैं अंजीर की...यह एक ऐसा ड्राई फ्रूट है जिसमें कई विटामिन और मल्टीन्यूट्रिएंट्स पाए जाते हैं। इसमें खनिज, विटामिन और फाइबर भरपूर मात्रा में पाया जाता है। इसका घुलनशील फाइबर इंसुलिन को फास्ट कर ब्लड शुगर को पचाने में मदद करता है। इस वजह से डाबिटीज के मरीजों के लिए इस ड्राई फ्रूट का सेवन अमृत समान है। चलिए, जानते हैं डायबिटीज में आप अंजीर का सेवन कैसे करें और एक दिन में कितना खाएं?

एक दिन में कितना अंजीर खाना चाहिए?

अंजीर का ग्लाइसेमिक इंडेक्स कम होता है। इसका जीआई लगभग 51 के आसपास है। ऐस में इस वजह से डायबिटीज के मरीज में अंजीर का सेवन कर सकते हैं। बस खाने के तरीके पर थोड़ा ध्यान देना होगा। दरअसल, इसका ज्याद सेवन डायबिटीज के मरीजों के लिए नुकसानदायक हो सकता है। बता दें ब्लड शुगर के मरीजों को एक दिन में ज्यादा से ज्यादा 2 से 3 अंजीर खाना चाहिए। साथ ही अंजीर का सेवन भिगोकर ही करना चाहिए। 2-3 अंजीर को रात भर पानी में भिगोकर अगली सुबह खाएं। इस प्रकार से अंजीर का सेवन आपकी सेहत के लिए फायदेमंद है।

इन समस्यायों में भी अंजीर है फायदेमंद

हड्डियां होती हैं मजबूत: अंजीर कैल्शियम और पोटैशियम दोनों का अच्छा स्रोत है। ये खनिज हड्डियों के घनत्व को बेहतर बनाने के लिए एक साथ काम कर सकते हैं, जो बदले में ऑस्टियोपोरोसिस जैसी स्थितियों को रोक सकता है। अध्ययनों से पता चलता है कि विशेष रूप से पोटेशियम युक्त आहार हड्डियों के स्वास्थ्य में सुधार कर सकता है और हड्डियों के टर्नओवर को कम कर सकता है।

स्किन के लिए भी लाभकारी: अंजीर में पाए जाने वाले पोषक तत्व और विटामिन सीबम उत्पादन और त्वचा मेलेनिन को संतुलित करने, एपिडर्मल पानी की कमी को रोकने और बहुत कुछ करने में मदद करते हैं। यह हाइड्रेशन को बढ़ाता है और त्वचा को झुर्रियों और समय से पहले बूढ़ा होने से बचाता है। हालांकि, अंजीर खुन को गाढ़ा करता है इसलिए रक्त को पतला करने की दवा लेने वाले लोगों को इसे अपने डाइट में शामिल करने से पहले डॉक्टर से कंसल्ट कर लेना चाहिए। -डा पीयूष त्रिवेदी आयुर्वेद विशेषज्ञ जयपुरः एक्यूप्रेशर सेवा समिति

शाही शादियों की नगरी में सजा वेडिंग इंडस्ट्री का भव्य मंच

वीवा अवार्ड में 300 से अधिक दिग्गजों का संगम, अरशद हुसैन ने दिखाया कारोबार के भविष्य का रास्ता

उदयपुर. शाबाश इंडिया

शाही महलों, झीलों और भव्य डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए विश्वभर में पहचान बना चुके उदयपुर में मंगलवार को वेडिंग, इवेंट और हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री का शानदार संगम देखने को मिला। बंबूसा रिसोर्ट एंड स्पा में वीवा की ओर से आयोजित ''वेडिंग इंडस्ट्री एंड वेंडर अवार्ड'' समारोह में देशभर से आए 300 से अधिक विशेषज्ञों ने बदलते दौर की शादियों, नए कारोबारी अवसरों और भविष्य की संभावनाओं पर मंथन किया। आयोजन में वेडिंग प्लानर्स, इवेंट मैनेजर्स, होटल एवं रिसोर्ट प्रतिनिधियों, डेकोरेटर्स, कैटरर्स, वेंडर्स और हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र के प्रमुख प्रोफेशनल्स ने सहभागिता की। भव्य सजावट और उत्सवी वातावरण के बीच आयोजित समारोह नेटवर्किंग, नवाचार और अनुभवों के आदान-प्रदान का प्रभावशाली मंच बन गया। कार्यक्रम का सबसे महत्वपूर्ण आकर्षण देश के प्रतिष्ठित इवेंट विशेषज्ञ अरशद हुसैन का विशेष सत्र रहा। फेडरेशन ऑफ राजस्थान इवेंट मैनेजर्स के पूर्व अध्यक्ष, आईडब्ल्यूटीसी के संस्थापक तथा इवेंट मैनेजर्स डे के ग्लोबल कन्वीनर हुसैन ने वेडिंग इंडस्ट्री के बदलते ट्रेंड्स और नए व्यावसायिक अवसरों पर विस्तार से विचार रखे। उन्होंने कहा कि आज विवाह समारोह केवल रस्मों और सजावट तक सीमित नहीं रहे, बल्कि हर आयोजन एक विशिष्ट अनुभव और कहानी का रूप ले चुका है। आधुनिक तकनीक, थीम आधारित आयोजन, डिजिटल प्रस्तुति, व्यक्तिगत सेवाएं और बेहतर क्लाइंट एक्सपीरियंस इस कारोबार की नई पहचान बन रहे हैं। हुसैन ने वेडिंग इंडस्ट्री को होटल, पर्यटन, ट्रैवल, कैटरिंग, डेकोरेशन, मनोरंजन, फोटोग्राफी और इवेंट मैनेजमेंट को जोड़ने वाला विशाल आर्थिक तंत्र बताया। उन्होंने कहा कि भविष्य उन्हीं पेशेवरों का है, जो परंपरा की आत्मा को सुरक्षित रखते हुए आधुनिकता और नवाचार को अपनाएंगे। इवेंट एवं वेडिंग इंडस्ट्री में उल्लेखनीय योगदान के लिए उदयपुर इवेंट इंडस्ट्री की ओर से अरशद हुसैन का सम्मान किया गया। समारोह में राजस्थान को डेस्टिनेशन वेडिंग के वैश्विक केंद्र के रूप में विकसित करने, नए बाजार तलाशने और इंडस्ट्री से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों के बीच सहयोग बढ़ाने पर भी चर्चा हुई। आयोजन समिति के कमल शर्मा, राजकमल शर्मा और हैदर अली ने अतिथियों का स्वागत किया। इस अवसर पर उदयपुर होटल फेडरेशन के योगेश्वर सिंह कुमावत, बीसीआई उत्सव के अध्यक्ष मुकेश माधवानी तथा बंबूसा रिसोर्ट एंड स्पा की मैनेजिंग डायरेक्टर ईशानी वर्दियां सहित अनेक प्रमुख प्रतिनिधि मौजूद रहे। वीवा का यह आयोजन उदयपुर की चमकदार वेडिंग पहचान को नए कारोबारी दृष्टिकोण, मजबूत नेटवर्किंग और भविष्य की संभावनाओं से जोड़ता हुआ नजर आया।

रिपोर्ट/फोटो: राकेश शर्मा 'राजदीप'

मातृ ऋण, महात्मा ऋण और परमात्मा ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकते : आचार्य रामदयालजी

माणिक्यनगर रामद्वारा धाम में चातुर्मासिक सत्संग

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया। दुनिया के सभी ऋण चुकाए जा सकते हैं, लेकिन मातृ ऋण कभी नहीं चुकाया जा सकता। जिस तरह हवा-पानी के बिना पेड़ बड़ा नहीं हो सकता, उसी तरह मां के दूध के बिना बालक का शरीर पुष्ट नहीं हो सकता। मनुष्य मातृ ऋण, महात्मा ऋण और परमात्मा ऋण से कभी मुक्त नहीं हो सकता। ये विचार अंतरराष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा के पीठाधीश्वर जगतगुरु आचार्य स्वामी रामदयालजी महाराज ने बुधवार को माणिक्यनगर रामद्वारा धाम में ''विश्व शांति कल्याण'' चातुर्मास के तहत दैनिक सत्संग में व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि मातृ ऋण से शरीर मिलता है, महात्मा ऋण से आत्मतत्व का ज्ञान और परमात्मा जन्म-मरण से मुक्ति का मार्ग प्रदान करते हैं। माता-पिता हमेशा संतान का हित चाहते हैं, लेकिन कई बार संपन्नता प्राप्त करने के बाद संतान उन्हें ही व्यथित कर देती है। आचार्यश्री ने कहा कि जीवन में प्राप्त ज्ञान गुरु की कृपा का परिणाम है, इसलिए गुरु के प्रति सदैव कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। अहंकार और कृतघ्नता मनुष्य के पतन का कारण बनते हैं। इससे पूर्व संत मनोरथरामजी आलोट ने मानस प्रवचन दिया। प्रवचन के बाद श्रद्धालुओं ने आचार्यश्री की आरती की। सत्संग में भीलवाड़ा सहित विभिन्न स्थानों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु शामिल हुए।

टाइम्स क्रिटिकल थिंकिंग चैंपियनशिप 2026 में विद्यार्थियों को किया पुरस्कृत

जोधपुर. शाबाश इंडिया

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय चेराई, ब्लॉक तिंवरी के 5 विद्यार्थियों ने टाइम्स क्रिटिकल थिंकिंग चैंपियनशिप 2026 में भाग लिया। विद्यालय के पीईईओ लुम्बा राम चौधरी ने बताया कि ऑनलाइन क्विज के माध्यम से विद्यार्थियों को अपनी विश्लेषणात्मक सोच, तार्किक क्षमता एवं सीखने की प्रवृत्ति को विकसित करने का अवसर मिला। उन्होंने बताया कि नई शिक्षा नीति के अनुरूप भारती एयरटेल फाउंडेशन की ओर से विद्यार्थियों को इस प्रकार के शैक्षणिक मंच उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे उनमें आलोचनात्मक एवं तार्किक चिंतन की क्षमता विकसित हो सके। चैंपियनशिप में कक्षा 12 के विद्यार्थी इमरती, उर्मिला, कौशल्या, सुमित्रा और घनश्याम ने भाग लिया। विद्यार्थियों का उत्साह एवं मनोबल बढ़ाने के लिए विद्यालय की प्रार्थना सभा में उन्हें प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शिक्षक हरसुख राम विश्नोई, मोहम्मद अकरम, अशोक कुमार, राकेश खोखर, भंवरा राम मेघवाल, सुखा राम, दुर्गा, ऋतु गाडगीळ, अरुण कुमार व्यास, रमेश, सोना राम और चीमा राम सहित विद्यालय स्टाफ ने विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

श्री महावीर कॉलेज में नवागंतुक विद्यार्थियों के लिए "आरम्भ" ओरिएंटेशन डे का आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री महावीर कॉलेज में बुधवार को नवागंतुक विद्यार्थियों के स्वागत के लिए महावीर सभा भवन में ''आरम्भ'' ओरिएंटेशन डे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मिस्टिक ब्रेन्स प्रा. लि. के संस्थापक निदेशक विक्रम शर्मा, भारत सरकार के पूर्व वरिष्ठ निदेशक डॉ. रमेश मित्तल, महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद के अध्यक्ष उमरावमल संघी, मानद मंत्री सुनील बख्शी, कोषाध्यक्ष महेश काला, मुख्य समन्वयक प्रो. राजीव जैन, कन्वीनर सीए प्रमोद पाटनी, राजेंद्र बिलाला, विनोद जैन कोटखावदा एवं प्राचार्य डॉ. आशीष गुप्ता ने दीप प्रज्वलित कर किया। अतिथियों का तिलक, माला एवं शॉल से स्वागत किया गया। स्वागत उद्बोधन में मुख्य समन्वयक प्रो. राजीव जैन ने कहा कि महाविद्यालय केवल शिक्षा का केंद्र नहीं, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण, नैतिक मूल्यों और नेतृत्व क्षमता के विकास का भी सशक्त मंच है।प्राचार्य डॉ. आशीष गुप्ता ने विद्यार्थियों को अनुशासन का महत्व बताते हुए महाविद्यालय की उपलब्धियों, शैक्षणिक गतिविधियों, परिसर की सुविधाओं और स्टाफ की जानकारी दी। उन्होंने टेक्नो, स्पोर्ट्स, कल्चरल, लिटरेरी एवं कॉर्पोरेट रिसोर्स क्लब की गतिविधियों से अवगत कराते हुए विद्यार्थियों को इनमें सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित किया। मुख्य अतिथि विक्रम शर्मा एवं डॉ. रमेश मित्तल ने विद्यार्थियों को जीवन में स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित करने, निरंतर सीखने, व्यक्तित्व एवं नेतृत्व क्षमता विकसित करने और सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़ने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि सफलता के लिए ज्ञान के साथ अनुशासन, आत्मविश्वास और निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद के अध्यक्ष उमरावमल संघी ने नवागंतुक विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए महाविद्यालय में आगामी तीन वर्षों का अधिकतम सदुपयोग कर सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास के लिए प्रेरित किया। अंत में कॉलेज कन्वीनर सीए प्रमोद पाटनी ने अतिथियों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों का आभार व्यक्त किया और नवागंतुक विद्यार्थियों को उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं दीं।

शास्त्रीय संगीत और नृत्य का अनुपम संगम

सावन के सुरों से सजेगी शिल्पग्राम की सांझ

'मल्हार' में शास्त्रीय गायन, तबला, सितार और मोहिनीअट्टम की प्रस्तुतियां

स्वर, ताल, तंत्र और भाव का सुरमयी उत्सव

उदयपुर. शाबाश इंडिया। सावन केवल बादलों, बूंदों और हरियाली का मौसम नहीं, बल्कि मन के भीतर गूंजते अनगिनत रागों का उत्सव भी है। इसी सुरमयी ऋतु में शिल्पग्राम का दर्पण सभागार 8 और 9 अगस्त को भारतीय शास्त्रीय संगीत और नृत्य की मोहक छवियों से जीवंत होगा। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, उदयपुर की ओर से आयोजित दो दिवसीय उत्सव ''मल्हार'' में स्वर, ताल, तंत्र और नृत्य का अनुपम संगम देखने को मिलेगा। पहली सांझ 8 अगस्त को शाम 7 बजे शास्त्रीय गायिका गौरी पाठारे के स्वरों से खुलेगी। उनके गायन में रागों की गंभीरता, भावों की कोमलता और साधना की गहराई श्रोताओं को एक आत्मीय संगीत-यात्रा पर ले जाएगी। इसके बाद प्रसिद्ध तबला वादक हेतल मेहता अपनी अंगुलियों की सधी हुई थाप से लय का ऐसा संसार रचेंगे, जिसमें कभी बूंदों की रुनझुन सुनाई देगी तो कभी उमड़ते बादलों की गर्जना का आभास होगा। दूसरी संध्या 9 अगस्त को सितार की मधुर झंकार से महकेगी। सितार वादक विनायक चित्तर रागों की भावपूर्ण छटा बिखेरते हुए तारों पर सावन की संवेदनाओं को स्वर देंगे। सितार से उठती धुनें कभी शांत बहती नदी-सी लगेंगी, तो कभी वर्षा में झूमती डालियों-सी चंचल। संध्या का समापन सुप्रसिद्ध नृत्यांगना पल्लवी कृष्णन की मोहिनीअट्टम प्रस्तुति से होगा। उनकी कोमल पदचाप, लयपूर्ण देहभाषा, भावमयी दृष्टि और सुगढ़ मुद्राएं दक्षिण भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपरा की सौंदर्यपूर्ण अनुभूति कराएंगी। केंद्र के निदेशक डॉ. अश्विन एम. दलवी के अनुसार दोनों दिन प्रस्तुतियां शाम 7 बजे दर्पण सभागार में प्रारंभ होंगी। दर्शकों के लिए प्रवेश निःशुल्क रहेगा। सावन की फुहारों के बीच आयोजित 'मल्हार' कला प्रेमियों के लिए ऐसी सांस्कृतिक संध्या बनेगी, जहां बाहर बादल बरसेंगे और सभागार के भीतर सुर, ताल और भाव।

दो दिवसीय उत्सव
8-9 अगस्त
शाम 7 बजे से
दर्पण सभागार
शिल्पग्राम, उदयपुर

प्रवेश निःशुल्क

रिपोर्ट: राकेश शर्मा 'राजदीप'

परमात्मा से मांगना है तो ज्ञान मांगें, जिसे छोड़कर नहीं जाना पड़ता : आचार्य पुलकसागर

सूर्यमहल में दिया धर्म संदेश, चित्रकूटधाम में 15 अगस्त से सर्व समाज के लिए ज्ञान गंगा महोत्सव

भीलवाड़ा. शाबाश इंडिया

श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर ट्रस्ट, मैन सेक्टर शास्त्रीनगर के तत्वावधान में सकल दिगम्बर जैन समाज की ओर से सूर्यमहल में राष्ट्रसंत मनोज्ञाचार्य पुलकसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में चातुर्मासिक धर्म साधना जारी है। बुधवार को धर्म संदेश में आचार्य पुलकसागरजी महाराज ने कहा कि जीवन में वही मांगना चाहिए, जिसे सामने वाला खुशी से दे सके। भगवान से भी ऐसी वस्तु मांगनी चाहिए, जिसे कुछ समय बाद छोड़कर नहीं जाना पड़े और वह ज्ञान है। जीवन में ज्ञान ही संतुष्टि का खजाना है, लेकिन उसे ग्रहण करने की तीव्र भावना और पात्रता आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ज्ञान प्राप्ति के लिए राग, द्वेष, क्रोध, मान, माया और लोभ जैसे विकारों को जीवन से निकालकर सहज और सरल बनना होगा। सबसे पहले प्रभु और गुरु की बात सुनना, फिर गुनना और उसके बाद चुनना चाहिए। तभी सम्यक ज्ञान, दर्शन एवं चरित्र रूपी रत्नत्रय का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा और गुरु के बताए मार्ग पर चले बिना जीवन सम्यक नहीं बन सकता। आचार्यश्री ने कहा कि 15 अगस्त से चित्रकूटधाम में आयोजित ज्ञान गंगा महोत्सव में जीवन जीने की कला और समस्याओं के समाधान से जुड़े विभिन्न विषयों पर धर्म संदेश दिए जाएंगे। श्री पुलकसागर चातुर्मास समिति अध्यक्ष प्रवीण चौधरी ने बताया कि दीप प्रज्वलन, पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट का सौभाग्य बिजयनगर निवासी सुभाषचंद, प्रियांशु निर्वाण कासलीवाल परिवार ने प्राप्त किया। धर्म संदेश सुनने के लिए विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाएं पहुंचे। समिति संयोजक मनीष शाह ने बताया कि सूर्यमहल में 14 अगस्त तक प्रतिदिन सुबह 8.30 से 10 बजे तक प्रवचन तथा शाम 7 से 8 बजे तक आनंद यात्रा एवं आरती होगी। सह संयोजक लोकेश अजमेरा ने बताया कि सर्व समाज के लिए ज्ञान गंगा महोत्सव 15 से 30 अगस्त तक चित्रकूटधाम में आयोजित होगा। इसमें देश-प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना है।

शैक्षणिक बाधाओं को दूर करने के प्रयास जरूरी, 260 बच्चों को बांटे नए वस्त्र

राजकीय विद्यालय के 225 एवं दो आंगनवाड़ियों के 35 बच्चों को मिला लाभ

अजमेर. शाबाश इंडिया। लायंस क्लब्स इंटरनेशनल प्रांत 3233 ई-2 के प्रांतपाल लायन निशांत जैन के प्रांतीय स्लोगन ''फ्लाइट ऑफ ड्रीम'' के तहत संचालित ''मिशन मुस्कान'' कार्यक्रम के अंतर्गत लायंस क्लब अजमेर आस्था की ओर से राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय मदारपुरा में गणवेश सेवा कार्यक्रम आयोजित किया गया। क्लब सचिव लायन अनिल चोरड़िया ने बताया कि समाजसेवी लायन राकेश पालीवाल, प्रांतीय सभापति मिशन मुस्कान लायन अतुल पाटनी, दिल्ली निवासी राजेश जैन, अजमेर के होजरी व्यवसायी एवं अन्य भामाशाहों के सहयोग से विद्यालय के 225 विद्यार्थियों को नए वस्त्र प्रदान किए गए। इसके साथ ही ग्राम मदारपुरा की आंगनवाड़ी प्रथम एवं द्वितीय के 35 बच्चों को भी नए वस्त्र दिए गए। इस प्रकार कुल 260 बच्चे लाभान्वित हुए। कार्यक्रम संयोजक एवं प्रांतीय सभापति मिशन मुस्कान लायन अतुल पाटनी के संयोजन तथा समाजसेवी लायन राकेश पालीवाल के मुख्य आतिथ्य में सेवा कार्य संपन्न हुआ। इससे पूर्व विद्यालय की प्रधानाचार्य निशा कुमारी वाजा ने क्लब सदस्यों का स्वागत किया और विद्यार्थियों के शैक्षणिक कार्य में आने वाली आवश्यकताओं एवं सुविधाओं की जानकारी दी। लायन अतुल पाटनी ने बताया कि विद्यालय में छात्राओं के उपयोग के लिए शौचालय के जीर्णोद्धार का कार्य क्लब सदस्य लायन पदम चंद जैन के संयोजन में शीघ्र कराने का प्रयास किया जाएगा। क्लब अध्यक्ष लायन कमल बाफना ने सहयोगियों का आभार जताया। इस अवसर पर पूर्व प्रधानाचार्य सुरेश चंद सोनी, प्रधानाचार्य निशा कुमारी वाजा, लायन अतुल पाटनी, लायन राकेश पालीवाल, लायन सुरेंद्र मेहता, शिक्षक इन्दर चंद जोधावत, किरण मीणा, सुमन वैष्णव, शीला कुमारी सहित आंगनवाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकाएं एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मुनि संस्कारसागर महाराज के प्रवचनों में उमड़े श्रद्धालु, 9 अगस्त को चातुर्मास स्थापना समारोह

पिड़ावा. शाबाश इंडिया

श्री सांवलिया पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर, पिड़ावा में विराजमान मुनि संस्कारसागरजी महाराज के सान्निध्य में चातुर्मासिक प्रवचन कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। प्रतिदिन बड़ी संख्या में श्रद्धालु मुनिश्री के मंगल प्रवचनों का धर्मलाभ ले रहे हैं। चातुर्मास समिति उपाध्यक्ष प्रदीप जैन ने बताया कि प्रवचन कार्यक्रम का शुभारंभ स्नेहलता कासलीवाल ने मंगलाचरण से किया। मुनिश्री के पाद प्रक्षालन का सौभाग्य शैलेन्द्र जैन एडवोकेट, संजय जैन अध्यापक, विनोद जैन एडवोकेट, दिनेश जैन सेक्रेटरी, चंद्रशेखर जैन, लालचंद जैन पटवारी एवं शैलेन्द्र हार्डवेयर को प्राप्त हुआ। शास्त्र भेंट करने का सौभाग्य महिला मंडल को मिला। शुजालपुर एवं जामनेर जैन समाज से आए श्रद्धालुओं ने भी श्रीफल भेंट कर मुनिश्री का आशीर्वाद लिया। मंगल प्रवचन में मुनि संस्कारसागरजी महाराज ने कहा कि मनुष्य जीवन के पाप रूपी कर्मों को सत्कर्म, संयम और धर्म के मार्ग पर चलकर नष्ट कर सकता है। उन्होंने आत्मकल्याण, सदाचार और धर्ममय जीवन के महत्व पर प्रकाश डाला। संचालन संगीतकार आशीष जैन ने किया। प्रदीप जैन ने बताया कि 9 अगस्त को मुनिश्री की मंगल चातुर्मास स्थापना का आयोजन होगा। दोपहर 12 बजे जुलूस निकाला जाएगा। इसमें भोपाल की नेमी नगर कॉलोनी के बच्चों का दिव्य घोष, तीन बग्गियों में इंद्र-इंद्राणी स्वरूप परिवारों के हाथों में रजत कलश, धर्मध्वजा लिए अश्व एवं कृत्रिम पुष्पवर्षा आकर्षण का केंद्र रहेगी। जुलूस के बाद आर्जव सभागार मांगलिक भवन में चातुर्मास स्थापना कार्यक्रम होगा। समारोह के लिए सुरेंद्र सिंह जैन, जीवन जैन, त्रिलोक सिंह जैन, अरविन्द जैन एवं मनीष जैन के नेतृत्व में विभिन्न नगरों के जैन समाज को निमंत्रण दिए जा रहे हैं। व्यवस्थाओं की जिम्मेदारी सुखमाल जैन, नितिन जैन, अभिषेक पिंटू जैन, हितेश जैन, पंडित राजकुमार जैन, आशीष जैन, अविनाश जैन, अवधेश जैन, संजय जैन सहित जिनवाणी महिला मंडल एवं समाजजनों को सौंपी गई है। समाजजन आयोजन की तैयारियों में जुटे हैं।

निष्काम भक्ति ही आत्मा को भगवान बनने की दिशा में ले जाती है : आचार्य उदारसागर

मुरैना. शाबाश इंडिया

आचार्य उदारसागरजी महाराज ने बड़े जैन मंदिर में धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि भक्ति का वास्तविक स्वरूप निस्वार्थ और निष्काम होना चाहिए। जब तक पूजा, आराधना और भक्ति सांसारिक लाभ, धन, पद, प्रतिष्ठा, संतान, व्यवसाय अथवा अन्य इच्छाओं की पूर्ति के लिए होगी, तब तक वह आत्मकल्याण का माध्यम नहीं बन सकती। सच्ची भक्ति वही है, जिसमें आत्मशुद्धि, कर्मनिर्जरा और मोक्षमार्ग पर अग्रसर होने की भावना हो। आचार्यश्री ने कहा कि भगवान से कुछ मांगने की अपेक्षा उनके गुणों को जीवन में उतारने का प्रयास करना चाहिए। जैन दर्शन में भगवान किसी का भाग्य नहीं बदलते, बल्कि उनका आदर्श जीवन मनुष्य को स्वयं अपना भाग्य बदलने की प्रेरणा देता है। इसलिए भक्ति का उद्देश्य बाहरी उपलब्धियां नहीं, बल्कि आंतरिक परिवर्तन होना चाहिए। उन्होंने कहा कि जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की अनंत संभावनाएं विद्यमान हैं। तीर्थंकरों एवं सिद्ध भगवान ने भी साधना, संयम और तप के माध्यम से परमात्म पद प्राप्त किया। निस्वार्थ भाव से की गई पूजा और भक्ति ही आत्मिक उन्नति की दिशा में आगे बढ़ाती है। स्वार्थ, अपेक्षा और अहंकार से की गई आराधना सार्थक नहीं हो सकती। भक्ति में निर्मल भाव, पवित्र श्रद्धा और निष्कपट समर्पण होना चाहिए।

माला और माल चौराहे पर नहीं गिनना चाहिए

मुनि उपशान्तसागरजी महाराज ने प्रवचन में कहा कि ''माला और माल चौराहे पर नहीं गिनना चाहिए, माला गिनोगे तो मालामाल हो जाओगे।'' उन्होंने कहा कि जप, तप, दान और भक्ति का प्रदर्शन साधना के प्रभाव को कम करता है। माला के मनकों की संख्या से अधिक महत्वपूर्ण श्रद्धा, पवित्र भाव और आत्मिक एकाग्रता है। निस्वार्थ एवं विनम्र भाव से प्रभु को समर्पित भक्ति आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।

मंगलाचरण से धर्मसभा का शुभारंभ

धर्मसभा का शुभारंभ गुंजन जैन के मंगलाचरण से हुआ। इसके बाद समाजजनों ने दीप प्रज्वलित किया। संचालन नवनीत जैन शास्त्री ने किया। धर्मसभा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने उपस्थित होकर संतों के प्रवचनों का धर्मलाभ लिया।

आत्मा में निर्विकल्प साम्यभाव धारण करना ही मोक्ष मार्ग: मुनि चिंतनसागर

सीकर में 19 अगस्त को होगा जैनेश्वरी दीक्षा महोत्सव

सीकर. शाबाश इंडिया

मनुष्य पर्याय में तीर्थंकर और जैन कुल मिलना सौभाग्य एवं पुण्य की बात है। सीकर का सौभाग्य है कि यहां आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज के विशाल संघ का समागम मिला है। संत समागम से जीवन उन्नत होता है। गुरु के शब्दों को कान खोलकर सुनना, गुरु पर आंखें बंद कर विश्वास करना और गुरु को दिल खोलकर समय अर्पित करना चाहिए। ये विचार आर्यिका महायशमती माताजी ने धर्मसभा में व्यक्त किए। डॉ. राजेश पंचोलिया के अनुसार माताजी ने कहा कि धर्म प्रवचन सुनते समय मुंह बंद और सेवा करते समय घड़ी बंद कर लेनी चाहिए। गुरु के समक्ष सांसारिक कष्टों की अपेक्षा अपने दुर्गुण, क्रोध, परिग्रह और कषाय कम करने की भावना व्यक्त करनी चाहिए। भगवान के दर्शन करते समय भी उनके समान गुण प्राप्त करने और कर्मों का नाश करने की भावना रखनी चाहिए। भावों एवं परिणामों की विशुद्धता बढ़ने से कर्मों की निर्जरा होती है। उन्होंने आहार, औषधि, अभय एवं शास्त्र दान का महत्व बताते हुए कहा कि धर्मसभा में श्रवण और स्वाध्याय विनयपूर्वक करना चाहिए। मुनि चिंतनसागरजी महाराज ने कहा कि सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र को एकाग्रता से धारण करना मोक्ष मार्ग है। उन्होंने भाव कर्म, द्रव्य कर्म एवं नौ कर्म की विवेचना करते हुए कहा कि

आत्मा इन कर्मों से भिन्न ज्ञानमय द्रव्य है। आत्मा में निर्विकल्प साम्यभाव रखते हुए राग, द्वेष और मोह से रहित होकर एकाग्र होना ही मोक्ष मार्ग है।

19 अगस्त को जैनेश्वरी दीक्षा महोत्सव

मोक्ष सप्तमी के अवसर पर 19 अगस्त को सीकर में वात्सल्य वारिधि आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज के सान्निध्य में जैनेश्वरी दीक्षा महोत्सव आयोजित होगा। आयोजन आचार्य धर्मसागर सभागार, श्री पार्श्वनाथ भवन, दंग की नसियां,

बजाज रोड पर होगा। आचार्य वर्धमानसागर धर्म वात्सल्य वर्षायोग चातुर्मास समिति एवं श्री दिगम्बर जैन बड़ा मंदिर बीस पंथ आम्नाय प्रबंध समिति की ओर से सकल दिगम्बर जैन समाज सीकर के सहयोग से महोत्सव आयोजित किया जाएगा।

सम्यक दर्शन, ज्ञान और चरित्र की एकता ही मोक्षमार्ग : आचार्य विहर्षसागर

आर. के. कम्युनिटी सेंटर में धर्मसभा, विधायक विकास चौधरी ने लिया मंगल आशीर्वाद

किशनगढ़. शाबाश इंडिया

आर. के. कम्युनिटी सेंटर में धर्मसभा का आयोजन श्रद्धा एवं भक्ति के वातावरण में हुआ। शुभारंभ आचार्य वर्धमानसागरजी महाराज, आचार्य विरागसागरजी महाराज एवं आचार्य विशुद्धसागरजी महाराज के चित्रों के अनावरण और दीप प्रज्वलन से किया गया। धर्मसभा के पुण्यार्जक परिवार का सौभाग्य सम्पत पाटनी परिवार इचलकरंजी एवं सुभाष चौधरी परिवार किशनगढ़ को प्राप्त हुआ। इसके बाद आचार्य विहर्षसागरजी महाराज का पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट की गई। पूर्वाचार्यों के चित्रों पर अर्घ्य समर्पित किया गया। संचालन कमल बैद ने किया। धर्मसभा में आचार्य विहर्षसागरजी महाराज ने कहा कि मोक्षमार्ग के वास्तविक पथप्रदर्शक वे हैं, जिन्होंने कर्मरूपी बंधनों का पूर्णतः क्षय कर दिया है। सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान एवं सम्यक चरित्र की एकता ही मोक्षमार्ग है। तत्त्व एवं उनके वास्तविक अर्थों में अटूट श्रद्धा ही सम्यक दर्शन है। उन्होंने कहा कि साधु हो या श्रावक, देव, शास्त्र एवं गुरु के प्रति संशय नहीं रखना चाहिए। दान, गुरु सेवा, मंदिर निर्माण या प्रतिमा स्थापना जैसे पुण्य कार्य करने के बाद भी अहंकार नहीं होना चाहिए। साधु अपनी मयार्दा के अनुसार विहार करते हैं। किसी व्यक्ति या वस्तु के प्रति घृणा का भाव नहीं रखना चाहिए। प्रतिमा आपकी हो सकती है, लेकिन भगवान किसी के निजी नहीं हो सकते। आचार्यश्री ने कहा कि किसी से भूल हो जाए तो उसे सार्वजनिक करने के बजाय एकांत में प्रेमपूर्वक समझाना चाहिए। धर्म में वात्सल्य, विनय और परस्पर सहयोग का भाव आवश्यक है। ज्ञान, पूजा, तप, कुल, शरीर अथवा किसी उपलब्धि का अहंकार नहीं करना चाहिए। उन्होंने मंदिर में भगवान के दर्शन, अभिषेक और साधु-संतों को आहारदान का महत्व बताते हुए कहा कि साधु एक समय का आहार ग्रहण कर धर्म साधना करते हैं और उनकी साधना में दाता का भी अप्रत्यक्ष सहयोग रहता है।

जिनेन्द्र प्रभु की शांतिधारा

आर. के. कम्युनिटी सेंटर स्थित अस्थायी चैत्यालय में विराजमान आदिनाथ भगवान, पार्श्वनाथ भगवान एवं महावीर स्वामी के अभिषेक एवं शांतिधारा का पुण्य सौभाग्य महावीरप्रसाद, प्रदीपकुमार, दिलीप एवं संदीप गंगवाल परिवार रूपनगढ़ को प्राप्त हुआ।

विधायक विकास चौधरी ने लिया आशीर्वाद

किशनगढ़ विधायक विकास चौधरी ने आचार्य विहर्षसागरजी महाराज ससंघ के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। उनके साथ कांग्रेस नेता मोहित खंडेलवाल भी उपस्थित रहे। इस अवसर पर श्री मुनिसुव्रतनाथ दिगम्बर जैन पंचायत मदनगंज-किशनगढ़ के अध्यक्ष चंद्रप्रकाश बैद, मंत्री प्रदीप गंगवाल, राजेंद्र सोगानी, विजय गंगवाल एवं प्रदीप बाकलीवाल ने विधायक का स्वागत किया।

जेएसजी अरिहंत का दो दिवसीय पुष्कर भ्रमण कार्यक्रम संपन्न, 102 सदस्यों ने लिया भाग

जयपुर. शाबाश इंडिया

जैन सोशल ग्रुप अरिहंत परिवार के 102 सदस्यों का दो दिवसीय भ्रमण एवं नाइट आउट कार्यक्रम 2 से 3 अगस्त तक आनंदम रिसोर्ट, पुष्कर में आयोजित किया गया। ग्रुप अध्यक्ष अमरचंद-उषा दीवान एवं सचिव प्रतीक-पूजा जैन ने बताया कि रविवार सुबह 7 बजे दो बसों से यात्रा का शुभारंभ हुआ। यात्रा के दौरान अजमेर हाईवे स्थित ओल्ड राव रेस्टोरेंट में अल्पाहार के बाद सदस्यों ने नारेली जैन मंदिर में भोजन किया तथा जिनशासन जैन मंदिर एवं मुनिराज के दर्शन किए। इसके बाद सभी आनंदम रिसोर्ट पहुंचे। कार्यक्रम संयोजक राजेश-रुचि सेठी एवं लवलेश-नीलम बड़जात्या ने बताया कि रिसोर्ट पहुंचने के बाद रिमझिम फुहारों के बीच चौपाल पर हाई टी और भुट्टों का आनंद लिया गया। सदस्यों ने मनोरंजक खेलों एवं पूल गतिविधियों में भाग लिया। संयोजक विक्रम-रुचि जैन एवं विनीत-विजेता जैन ने बताया कि शाम को भोजन के बाद फ्रेंडशिप सेलिब्रेशन आयोजित किया गया। इसमें रिसोर्ट संचालकों के साथ ग्रुप के संस्थापक अध्यक्ष एवं नॉर्दर्न रीजन चेयरमैन राजीव-अनीला पाटनी, पूर्व अध्यक्ष महेंद्र-नीलम पाटनी, राजकुमार-अस्मिता पाटनी, राकेश-सुमन बड़जात्या, सन्मति-ज्योति जैन तथा निवर्तमान अध्यक्ष एवं कार्यक्रम सलाहकार राजकुमार-पायल सोगानी सहित सदस्यों ने नृत्य, मनोरंजक खेल एवं हाउजी में भाग लिया। उपाध्यक्ष विजय-बबीता बड़जात्या ने बताया कि कार्यक्रम देर रात तक चला। संयुक्त सचिव राजेश-रीना बिंदायका ने बताया कि दूसरे दिन सदस्यों ने योग, क्रिकेट, पूल एवं विभिन्न मनोरंजक गतिविधियों में हिस्सा लिया। दोपहर के भोजन के बाद सभी पुष्कर से रवाना हुए। वापसी में किशनगढ़ स्थित डंपिंग यार्ड पहुंचकर सदस्यों ने फोटोग्राफी की। इसके बाद आर. के. कम्युनिटी सेंटर में चातुर्मासरत आचार्य विहर्षसागरजी महाराज ससंघ के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया। शाम को शांति स्मारक में राजस्थानी भोजन दाल-बाटी-चूरमा का आनंद लिया गया। कार्यक्रम में भोजन व्यवस्था के लिए विक्रम-ऋतु जैन पांड्या की सराहना की गई। संस्थापक अध्यक्ष राजीव-अनीला पाटनी ने सफल आयोजन के लिए ग्रुप अध्यक्ष, सचिव, संयोजकों एवं सभी सहयोगियों को बधाई दी।

राष्ट्रीय एकता शिविर में उत्कृष्ट प्रदर्शन पर सनी को मिला गोल्ड मेडल

जयपुर. शाबाश इंडिया

राजा रामदेव पोदार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, गांधी नगर के छात्र सनी पुत्र गिरेन्द्र सिंह ने महेन्द्रगढ़, हरियाणा में आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर गोल्ड मेडल एवं प्रमाण पत्र प्राप्त किया। विद्यालय प्रशासन के अनुसार सनी ने राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत आयोजित राष्ट्रीय एकता शिविर में सहभागिता की। शिविर में उत्कृष्ट सहभागिता एवं प्रदर्शन के लिए उन्हें गोल्ड मेडल और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना के माध्यम से विद्यार्थियों में सामुदायिक सेवा, सामाजिक जिम्मेदारी एवं राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित की जाती हैं। विद्यालय परिसर में आयोजित सम्मान समारोह में प्रधानाचार्य लक्ष्मी नारायण झा ने सनी को गोल्ड मेडल एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना कार्यक्रम अधिकारी कुलदीप अग्रवाल, योगमाया, राजेश कुमार शर्मा सहित अन्य शिक्षक उपस्थित रहे। विद्यालय परिवार ने सनी की उपलब्धि पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। शिक्षकों ने कहा कि इस उपलब्धि से अन्य विद्यार्थियों को भी विभिन्न शैक्षणिक एवं सामाजिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी की प्रेरणा मिलेगी।

बेटी के पहले जन्मदिन पर 80 विद्यार्थियों को बांटी स्टेशनरी

उदयपुर. शाबाश इंडिया

उदयपुर जिले के सायरा ब्लॉक में शिक्षक आचार्य नरेन्द्र शास्त्री ने अपनी बेटी यशस्वी यादव का पहला जन्मदिन विद्यालय के विद्यार्थियों को स्टेशनरी वितरित कर मनाया। इस दौरान 80 से अधिक विद्यार्थियों को स्टेशनरी सामग्री प्रदान की गई। भंवरलाल घोघरा ने कहा कि जन्मदिन पर महंगी पार्टियां आयोजित करने के बजाय जरूरतमंद बच्चों के साथ खुशियां साझा कर इस तरह की प्रेरणादायी परंपरा शुरू की जा सकती है। उन्होंने इस पहल की सराहना करते हुए इसे समाज के लिए सकारात्मक संदेश बताया। इस अवसर पर नरेन्द्र शास्त्री, कर्णसिंह दलावत, अन्नाराम हिंगड़, सुनील कुमारी एवं भंवरलाल घोघरा सहित विद्यालय स्टाफ और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

साधना में सुख, साधनों में नहीं : आचार्य विशुद्धसागर

नई दिल्ली. शाबाश इंडिया

ऋषभ विहार में विराजमान दिगम्बर जैन पट्टाचार्य विशुद्धसागरजी महाराज ने धर्मसभा में कहा कि व्यक्ति जितने अधिक साधन और परिग्रह एकत्रित करता है, उतना ही कष्ट बढ़ता है। वास्तविक सुख साधनों में नहीं, बल्कि आत्म-साधना और संयम-साधना में है। यह जानकारी गुरुदेव के भक्त वैभव जैन बड़ामलहरा ने दी। आचार्यश्री ने कहा कि साधना में जो साधन सहायक बनें, वही वास्तव में उपयोगी हैं और जो साधना में बाधक बनें, उनका त्याग करना चाहिए। संयम अनमोल है और आत्मोत्थान का प्रमुख साधन है।

वध से खतरनाक बदनामी

उन्होंने कहा कि किसी की हत्या ही नहीं, बल्कि उसके यश को नष्ट करना, बदनाम करना और अपयश फैलाना भी हिंसा के समान है। किसी की प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाने से बचना चाहिए।

प्रशंसा मत चाहो, प्रशंसनीय बनो

आचार्यश्री ने कहा कि सज्जन व्यक्ति प्रशंसा की चाह नहीं रखता, बल्कि प्रशंसनीय बनने का पुरुषार्थ करता है। नाम के लिए काम करने के बजाय श्रेष्ठ कार्य करें तो नाम स्वतः होता है। मधुर बोलें, परस्पर सहयोग करें, बड़ों का आदर और छोटों से वात्सल्य रखें। जरूरतमंद को भोजन, प्यासे को पानी देने के साथ माता-पिता की सेवा और उपकारी के प्रति कृतज्ञता का भाव रखें। अच्छे गुण ही व्यक्ति को प्रशंसनीय बनाते हैं।

चिंता नहीं, चिंतन करें

आचार्य विशुद्धसागरजी ने कहा कि देह धर्म और आत्म धर्म तथा शब्द ज्ञान और आत्म ज्ञान अलग-अलग हैं। जीवन में सुख-शांति प्राप्त करने के लिए जिन चिंतन करें, चिंता नहीं। चिंता मनुष्य की मानसिक और शारीरिक क्षमता को प्रभावित करती है। इसलिए चिंता छोड़कर सकारात्मक एवं आत्मकल्याणकारी चिंतन की ओर बढ़ना चाहिए। देशना का संकलन श्रमण मुनि सुव्रतसागरजी ने किया। जानकारी अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन युवा परिषद के कार्याध्यक्ष अभिषेक अशोक पाटील, कोल्हापुर ने साझा की।

"सावन सखी एग्जीबिशन" के बैनर का विमोचन, 7 से 9 अगस्त तक होगा आयोजन

जयपुर. शाबाश इंडिया

श्री दिगम्बर जैन मंदिर, वरुण पथ, मानसरोवर में गणिनी आर्यिका रत्न विभाश्री माताजी एवं विनयश्री माताजी ससंघ के सान्निध्य में ''सावन सखी एग्जीबिशन'' के बैनर का विमोचन किया गया। इस अवसर पर एग्जीबिशन से जुड़ी महिला आयोजिकाओं ने माताजी से मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया और आयोजन की सफलता की कामना की। आयोजकों ने बताया कि इस आयोजन का उद्देश्य महिलाओं को अपनी प्रतिभा एवं रचनात्मकता प्रदर्शित करने के साथ आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देने के लिए मंच उपलब्ध कराना है। महिलाओं ने भविष्य में भी इस प्रकार के सामाजिक एवं रचनात्मक आयोजनों के माध्यम से अपनी प्रतिभा को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। ''सावन सखी एग्जीबिशन'' का आयोजन 7, 8 एवं 9 अगस्त को सुबह 10 से रात 10 बजे तक सामुदायिक केंद्र, सेक्टर-9, गोखले मार्ग, मानसरोवर में किया जाएगा। एग्जीबिशन में साड़ी, सूट, राखी, बेडशीट, ज्वेलरी, कॉस्मेटिक्स एवं गिफ्ट आइटम सहित विभिन्न उत्पादों के स्टॉल लगाए जाएंगे। इसके साथ ही आगंतुकों के लिए फूड स्टॉल भी उपलब्ध रहेंगे। आयोजन से संबंधित जानकारी के लिए खुशबू जैन, अंजू जैन, प्राची जैन एवं मोना जैन से संपर्क किया जा सकता है।

चांदपोल विद्युत मोक्षधाम गृह

आदरणीय,
मृत्यु पश्चात अपने प्रियजनों का दाह संस्कार लकड़ी की चिता में नहीं विद्युत शवदाह गृह में करवाएं।

प्रमुख विशेषताएं
- स्वेच्छा राशि से दाह संस्कार की व्यवस्था।
- जबकि इसके दाह संस्कार में करीब ₹3000 (लकड़ी में ₹10000 से अधिक) खर्च आता है।
- मोक्षधाम प्रबंधन सर्व समाज द्वारा।
- किसी भी ज्वलनशील पदार्थ (घर से जले छांने चरी में, घी, चंदन का बुरादा आदि) की इसमें आवश्यकता नहीं।
- स्टील की विशेष अर्थी जिसमें पार्थिव शरीर को सुरक्षित रखकर बांधा जा सकता है।
- मृत्यु पश्चात तीन वृक्षों को जीवनदान देखकर पुण्य के भागी बनेंगें।
- दाहसंस्कार से पूर्व सभी धार्मिक रीति रिवाज व संस्कार पूरे किए जा सकते हैं। कपाल क्रिया भी की जा सकती है।
- शव वाहन को विद्युत मोक्षधाम गृह तक ले जाया जा सकता है। आए हुए प्रिय जनों के लिए भी पार्किंग की पूर्ण सुविधा है।
- दाह संस्कार के बाद अस्थियों को सुरक्षित रखने की व्यवस्था।

विशेष अनुरोध
- शव को दाह संस्कार के लिए मशीन में रखने से पूर्व सब के द्वारा हाथ जोड़कर अंतिम विदाई के साथ श्रद्धांजलि देनी चाहिए।
- दाह संस्कार प्रक्रिया शुरू होने के आधे घंटे पश्चात आए हुए प्रियजनों को विदा किया जा सकता है।
- अपने परिवार, मित्रों व प्रियजनों को विद्युत शवदाह गृह में दाह संस्कार के लिए प्रेरित करना चाहिए।
- इस पुणीत कार्य में अधिकतम आर्थिक सहयोग करना चाहिए ताकि आप अनजाने जरूरतमंद व्यक्ति की मदद कर श्रेष्ठ पुण्य के भागी बन आनंदित रहें।

विद्युत मोक्षधाम गृह चांदपोल के लिए
स्वेच्छा राशि से
शव वाहन की व्यवस्था।

जिसमें 10 परिवार के सदस्य आसनी से प्रियजन की अर्थी के साथ बैठ सकते हैं।

कृपया स्मरण रखें कि यह हम सबकी संस्था है जिसका सबको मिलकर के संचालन करना हैं।

सबका मंगल हो....

निवेदक
सर्व समाज प्रबंध समिति

संपर्क सूत्र
सुदीप बगड़ा 9829433096 | आर.के. शारा 9414048374 | नवीन बिल्टीवाला 8764429470 | रवि जैन 9414074872

श्रावण मास : शुद्धता, शुभता, धार्मिकता, प्रकृति, श्रृंगार और विरह का अद्भुत संगम

लेखक : संजय जैन बड़जात्या, कामवन

भारत की सनातन संस्कृति में यदि किसी एक महीने को प्रकृति, अध्यात्म, प्रेम और लोकजीवन का सुंदर प्रतीक कहा जाए तो वह श्रावण मास है। सामान्य बोलचाल में जिसे ''सावन'' कहा जाता है, वह केवल पंचांग का एक महीना नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का जीवंत उत्सव है। यह ऐसा कालखंड है, जिसमें आस्था और प्रकृति एक-दूसरे का हाथ थामकर मनुष्य को आत्मिक शुद्धता की ओर ले जाती हैं। जिस प्रकार इस्लाम में रमजान का महीना इबादत और आत्मसंयम का संदेश देता है तथा जैन परंपरा में चातुर्मास आत्मशुद्धि, संयम और तपस्या का विशेष काल माना जाता है, उसी प्रकार सनातन परंपरा में श्रावण मास को भगवान शिव की आराधना, आत्मसंयम, भक्ति और लोकमंगल का विशेष समय माना गया है। भीषण ग्रीष्म ऋतु के बाद जब आकाश से वर्षा की पहली बूंद धरती को स्पर्श करती है तो मानो समूची प्रकृति नया जीवन प्राप्त कर लेती है। सूखी धरती हरी चादर ओढ़ लेती है, नदियां-तालाब भरने लगते हैं, खेतों में नई आशा अंकुरित होती है और मनुष्य के भीतर भी नवीन ऊर्जा का संचार होने लगता है। यही कारण है कि सावन केवल मौसम का परिवर्तन नहीं, बल्कि मन और प्रकृति के नवजीवन का प्रतीक माना गया है।

आत्मशुद्धि और धार्मिक साधना का समय

श्रावण मास को भगवान शिव की आराधना के लिए विशेष माना गया है। इस पूरे महीने देशभर के शिवालयों में पूजा-अर्चना, रुद्राभिषेक, जलाभिषेक, महामृत्युंजय मंत्र जाप और शिव स्तुति के आयोजन होते हैं। बड़ी संख्या में श्रद्धालु गंगाजल लाकर शिवलिंग का अभिषेक करते हैं। सावन के सोमवार का विशेष महत्व माना जाता है और श्रद्धालु व्रत रखकर भगवान शिव एवं माता पार्वती की आराधना करते हैं। यह केवल धार्मिक अनुष्ठान का समय नहीं, बल्कि आत्मसंयम के अभ्यास का अवसर भी है। अनेक लोग इस महीने सात्विक भोजन ग्रहण करते हैं, नशे से दूर रहते हैं, अनावश्यक हिंसा से बचते हैं तथा मन, वचन और कर्म की पवित्रता बनाए रखने का प्रयास करते हैं। वास्तव में सावन मनुष्य को बाहरी के साथ भीतरी शुद्धता का भी संदेश देता है।

प्रकृति और सावन का आध्यात्मिक संबंध

श्रावण का आगमन प्रकृति के सबसे मनोहारी रूपों में से एक को सामने लाता है। चारों ओर फैली हरियाली, बादलों का संगीत, वर्षा की रिमझिम, मिट्टी की सोंधी सुगंध, मोर का नृत्य और खेतों में लहलहाती फसलें मनुष्य के भीतर उल्लास और सकारात्मकता का संचार करती हैं। भारतीय दर्शन में प्रकृति को सदैव विशेष सम्मान मिला है। इसलिए सावन प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का भी अवसर है। इस मौसम में पौधरोपण, जल संरक्षण और पर्यावरण संरक्षण का संदेश विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है। आज जब पर्यावरण संकट विश्व की बड़ी चुनौतियों में शामिल है, तब सावन हमें प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

सावन और श्रृंगार का अनुपम सौंदर्य

भारतीय लोक साहित्य में सावन का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। यह महीना प्रेम, सौंदर्य और श्रृंगार का कोमल रूप प्रस्तुत करता है। गांवों में पेड़ों पर झूले पड़ते हैं, महिलाएं हरे परिधान धारण करती हैं, हाथों में मेहंदी रचाती हैं, चूड़ियां पहनती हैं और कजरी, मल्हार तथा सावनी गीत गाती हैं। हरियाली तीज, नागपंचमी और रक्षाबंधन जैसे पर्व भी इसी अवधि के आसपास आते हैं, जो परिवार एवं समाज के रिश्तों को मजबूत करते हैं।

श्रावण मास भारतीय संस्कृति का वह सुंदर अध्याय है, जिसमें धर्म, दर्शन, प्रकृति, प्रेम, लोकजीवन और साहित्य का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। यह महीना सिखाता है कि जीवन केवल भौतिक उपलब्धियों का नाम नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, संयम, करुणा, प्रकृति-प्रेम और आध्यात्मिक चेतना का भी नाम है।

नवविवाहिताओं के लिए सावन विशेष उत्साह का समय माना जाता है। मायके जाने की परंपरा, सखियों के साथ झूला झूलना और लोकगीतों का गायन भारतीय संस्कृति की जीवंत पहचान रहे हैं। भारतीय काव्य परंपरा में सावन का श्रृंगार केवल बाहरी सजावट नहीं, बल्कि मन के उल्लास का प्रतीक भी है। वर्षा की बूंदें, काले मेघ और शीतल हवाएं प्रेम की भावनाओं को और प्रगाढ़ कर देती हैं।

श्रृंगार के साथ विरह की भी ऋतु

सावन का दूसरा पक्ष उतना ही मार्मिक है, जितना उसका श्रृंगार। जहां मिलन है, वहीं विरह भी है। भारतीय साहित्य में सावन को विरह की ऋतु के रूप में भी चित्रित किया गया है। वर्षा की रिमझिम, मेघों की गर्जना और झूलों की मस्ती उन लोगों के हृदय में विरह की पीड़ा जगाती है, जिनके प्रिय उनसे दूर हैं। लोकगीतों में विरहिणी नायिका बादलों के माध्यम से अपने प्रिय को संदेश भेजती है। वह पपीहे की पुकार में प्रिय की आवाज खोजती है और वर्षा की प्रत्येक बूंद उसके मन में बिछोह की वेदना को और गहरा करती है। महाकवि कालिदास के ''मेघदूत'' में विरही यक्ष बादल को दूत बनाकर अपनी प्रिया तक संदेश पहुंचाता है। भारतीय साहित्य की इस परंपरा में वर्षा केवल प्राकृतिक घटना नहीं रहती, बल्कि मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति बन जाती है।

पौराणिक मान्यताओं में सावन

सनातन परंपरा में श्रावण मास के महत्व से जुड़ी अनेक धार्मिक एवं पौराणिक मान्यताएं प्रचलित हैं। एक मान्यता ऋषि मार्कण्डेय और उनकी शिवभक्ति से जुड़ी है। उनकी कथा भगवान शिव की आराधना और मृत्यु पर विजय के प्रतीक के रूप में धार्मिक साहित्य में वर्णित मिलती है। एक अन्य लोकमान्यता के अनुसार सावन में भगवान शिव के पृथ्वी पर आगमन की भावना से उनका विशेष पूजन एवं जलाभिषेक किया जाता है। समुद्र मंथन की कथा भी शिव आराधना से जुड़ी प्रमुख मान्यताओं में शामिल है। पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन से निकले विष को भगवान शिव ने ग्रहण कर सृष्टि की रक्षा की और नीलकंठ कहलाए। शिव आराधना में जलाभिषेक, बेलपत्र और अन्य पूजन सामग्री अर्पित करने की परंपरा को भी विभिन्न धार्मिक मान्यताओं से जोड़ा जाता है।

चातुर्मास और संयम का संदेश

वर्षा ऋतु के साथ चातुर्मास का विशेष धार्मिक महत्व जुड़ा है। विभिन्न भारतीय धार्मिक परंपराओं में यह अवधि साधना, संयम, आत्मचिंतन और जीवदया के लिए महत्वपूर्ण मानी जाती है। जैन परंपरा में वर्षा ऋतु के दौरान साधु-संत एक स्थान पर रहकर धर्म प्रभावना करते हैं और श्रावक भी संयम, स्वाध्याय एवं तप-साधना की ओर विशेष ध्यान देते हैं। इस प्रकार वर्षाकाल केवल प्रकृति के परिवर्तन का समय नहीं, बल्कि मनुष्य को अपने भीतर झांकने और जीवन को अधिक संयमित बनाने का अवसर भी प्रदान करता है।

सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व

सावन केवल मंदिरों और धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है। यह समाज में प्रेम, सहयोग और पारिवारिक एकता का संदेश भी देता है। गांवों में मेले लगते हैं, लोकनृत्य और लोकसंगीत जीवंत हो उठते हैं। किसान वर्षा के लिए प्रकृति के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए नई फसल की तैयारी में जुट जाते हैं। यह महीना हमें संयमित जीवन, प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, परिवार के प्रति समर्पण और समाज के प्रति उत्तरदायित्व का बोध कराता है। आज के भागदौड़ भरे जीवन में सावन हमें कुछ समय रुककर स्वयं के भीतर झांकने का अवसर देता है।

आधुनिक जीवन में सावन की प्रासंगिकता

विज्ञान और तकनीक के वर्तमान युग में भी सावन का सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व कम नहीं हुआ है। मानसिक तनाव, प्रदूषण, भौतिक प्रतिस्पर्धा और व्यस्त जीवन के बीच यह महीना हमें आध्यात्मिक संतुलन, मानसिक शांति और प्रकृति से जुड़ने की प्रेरणा देता है। सात्विक भोजन, योग, ध्यान, पौधरोपण, जल संरक्षण और सामाजिक सेवा जैसे कार्य सावन की भावना को और सार्थक बना सकते हैं। यदि इस महीने के संदेश को दैनिक जीवन में उतारा जाए तो व्यक्तिगत एवं सामाजिक दोनों स्तरों पर सकारात्मक परिवर्तन संभव है। श्रावण मास भारतीय संस्कृति का वह सुंदर अध्याय है, जिसमें धर्म, दर्शन, प्रकृति, प्रेम, लोकजीवन और साहित्य का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है। यह महीना सिखाता है कि जीवन केवल भौतिक उपलब्धियों का नाम नहीं, बल्कि आत्मशुद्धि, संयम, करुणा, प्रकृति-प्रेम और आध्यात्मिक चेतना का भी नाम है। सावन में जहां शिवभक्ति की गूंज सुनाई देती है, वहीं झूलों की मस्ती, मेहंदी की महक, कजरी की मधुर तान और विरह की मार्मिक संवेदना भी अपना अलग संसार रचती है। यही कारण है कि श्रावण केवल एक महीना नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की जीवंत अभिव्यक्ति है—जहां शुद्धता है, शुभता है, धार्मिकता है, प्रकृति है, श्रृंगार है और विरह की संवेदना भी है। आइए, इस श्रावण मास में हम धार्मिक अनुष्ठानों के साथ अपने विचारों को भी पवित्र बनाने, प्रकृति की रक्षा करने, जल संरक्षण को अपनाने और समाज में सद्भाव बढ़ाने का संकल्प लें। यही सावन की साधना को हमारे जीवन और समाज के लिए वास्तव में सार्थक बना सकता है।